महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : ०६

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

मार्च द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और....	सम्पादकीय	०४
०२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०६
०३. अविद्या का नाश करो - अथर्ववेद	शिवनारायण	१२
०४. परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्'...	आचार्य धर्मवीर	१५
०५. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		२०
०६. जिज्ञासा समाधान-१२९	आचार्य सोमदेव	२१
०७. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२३
०८. द्वितीय शताब्दी में प्रवेश	स्वामी सत्यप्रकाश	२४
०९. धर्म का आधार ब्रह्म है	आचार्य धर्मवीर	२७
१०. संस्था-समाचार	लेखराम आर्य	२९
११. हृदय की तड़पन	सोमेश पाठक	३६
१२. पुस्तक परिचय		३७
१३. भारतीय संस्कृति और नववर्ष	प्रभाकर आर्य	३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और देशभक्ति

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और देशभक्ति विगत लगभग ढाई वर्षों में अत्यन्त ज्वलन्त प्रश्न रहा है। अभिव्यक्ति मानव वाणी के द्वारा, लेखन के द्वारा या क्रियात्मक सृजना शक्ति के द्वारा, संगीत के द्वारा या अभिनय के द्वारा व्यक्त हो सकती है। प्रश्न यह है कि अभिव्यक्ति की मर्यादाएँ और उसका उद्देश्य किस प्रकार सुनिश्चित किया जा सकेगा। प्राचीन भारतीय संस्कृति अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की सर्वोन्मुखी प्रवक्ता रही है। जहाँ विचारधाराओं के आधार पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध न राज्य की ओर से होता था और न किसी विचारधारा विशेष के द्वारा। यही कारण था कि चिन्तन की इस उर्वरा भूमि में विभिन्न प्रकार की विचारधाराएँ पल्लवित हुईं और पुष्पित हुईं। भले ही उन विचारों से अन्य मत्तावलम्बी सहमत हों या ना हों।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इसी प्रकार जैन और बौद्ध धर्मों का उद्‌भव हुआ। क्या यह सुखद आश्चर्य नहीं है उन लोगों के लिए जो वैदिक परम्परा और विचारधारा के भिन्न चिन्तन को प्रस्फुटित कर रहे थे, वैदिक मीमांसा और कर्मकाण्ड पर तीव्र प्रहार हो रहे थे, तब न किसी शासक ने और न किसी चिन्तक ने बल प्रयोग या हिंसा के आधार पर स्वमत के विरुद्ध प्रचलित चिंतन की विभिन्न धाराओं के विपरीत बल प्रयोग किया हो। यही कारण है कि भारत में चरक जहाँ सांख्य का विचार देता है, वहीं पतंजलि महाभाष्य में दर्शन के मूल प्रश्नों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। नागार्जुन और अश्वघोष भले ही वे ब्राह्मण कुल में जन्में हों, वैदिक परम्परा का अध्ययन किया हो फिर भी उन्होंने बौद्ध दर्शन के आधारभूत ग्रन्थों का प्रणयन ही नहीं किया अपितु उनके साहित्य सृजन में अनवरत योगदान भी दिया। चार्वाक ने तो सभी तत्कालीन दार्शनिक विचारधाराओं पर तीव्र कुठाराघात किया।

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति में सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार, जगत सत्य है या असत्य, इत्यादि अनेक विचारधाराओं पर भारतीय तत्ववेत्ताओं, साहित्यकारों और सन्तों ने अपनी भावभूमि को निर्मित किया। यद्यपि शासन मताग्रही था, तथापि देश के विभिन्न क्षेत्रों में सृजन की अनवरत प्रक्रिया संचालित होती रही। भारत में अभिव्यक्ति के विभिन्न आयाम रहे हैं, जिनमें प्रतीकों की प्रधानता सर्वत्र विद्यमान रही है।

समकालीन संदर्भों में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और देशभक्ति के विश्लेषण की गहरी परख की आवश्यकता है। वेद में मातृभूमि की अभ्यर्थना विभिन्न मतों के द्वारा अभिव्यक्त की गई है। भाव और समर्पण मातृभूमि के प्रति अभिव्यक्त होते हैं। अभी हाल ही में दिल्ली के रामजस कॉलेज और फिर दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति की विद्रूप घटनायें, जिनमें विभिन्न राजनीतिक दलों का सोची समझी नीति के तहत कूदना अप्रत्याशित नहीं है फिर भी देश के भावनात्मक लगाव और देश को तोड़ने वाली शक्तियों के बीच गहरी खाई का निर्माण अवश्य करती है।

तथाकथित राजनीतिक अकादमिक विश्लेषण किसी ऐसी प्रविधि का निर्माण नहीं कर पाये कि 'कश्मीर की आजादी', 'भारत के टुकड़े करने', 'अफजल गुरु की फाँसी.......' जैसे नारों का औचित्य देशभक्ति के रूप में सिद्ध कर सकें। फिर क्यों नेताओं के रूप में विभिन्न घटकों में बंटे मीडिया, शिक्षक और नेता पिष्टपेषण की नूरा कुश्ती करते दिख रहे हैं?

वस्तुत: सामान्य सी घटना बताने वाले युद्ध और पाकिस्तान जैसे शब्द की पक्षधर्मिता को समझना नहीं चाहते। जाने-अनजाने में कहे गये कथनों को अपने पक्ष में करने की जिद अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के मूल भाव को ही तिरोहित कर देती है।

आवश्यकता है कि महर्षि दयानन्द की चिन्तनधारा के आलोक में 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।' अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और देशभक्ति की भावना चाहिए तभी हम शिक्षा के मन्दिरों को निष्पक्ष ज्ञान की प्रयोगशाला बना पायेंगे। अभी तक ये सभी केन्द्र विशेष मतों के मठ बन रहे थे, अब उनके ढहने की बारी है, बस इसी अकुलाहट का परिणाम है यह भ्रान्त धारणा कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता वर्तमान में बाधित हो रही है।

भारत ही ऐसा देश है कि जहाँ देश-प्रेम हमारी संस्कृति की आधारशिला है और अभिव्यक्ति की अनन्त स्वतन्त्रता यहाँ के कण-कण में विद्यमान है। जिगर मुरादाबादी ने ठीक ही लिखा है-

उनका जो काम है, वह अहले सियासत जानें
मेरा पैगाम मुहब्बत है, जहाँ तक पहुँचे।

इसलिए स्थापित मठाधीशों के अस्तित्व को अब चुनौती दी जा रही है, जिसे वे पचा नहीं पा रहे और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की आड़ लेकर अपना बचाव करने का ढोंग कर रहे हैं।

आपका

दिनेश

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया सभा के पते पर अवश्य ही भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

कुछ तड़प–कुछ झड़प

– राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्य वक्ताओं व लेखकों की सेवा में:–कुछ समय से आर्यसमाज के उत्सवों व सम्मेलनों में सब बोलने वालों को एक विषय दिया जाता है, ''आज के युग में ऋषि दयानन्द की प्रासंगिकता'' इस विषय पर बोलने वाले (अपवाद रूप में एक दो को छोड़कर) प्राय: सब वक्ता ऋषि दयानन्द की देन व महत्ता पर अपने घिसे-पिटे रेडीमेड भाषण उगल देते हैं। जब मैं कॉलेज का विद्यार्थी था तब पूज्य उपाध्याय जी की एक मौलिक पुस्तक सुरुचि से पढ़ी थी। पुस्तक बहुत बड़ी तो नहीं थी, परन्तु बार-बार पढ़ी। आज भी यदा-कदा उसका स्वाध्याय करता हूँ। आज के संसार में वैदिक विचारधारा को हम कैसे प्रस्तुत करें, यही उसके लेखन व प्रकाशन का प्रयोजन था।

इसमें दो अध्याय अनादित्त्व पर हैं। सब मूल सिद्धान्तों पर लिखते हुए महान् दर्शनिक की तान यही है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति अनादि हैं। ईश्वर का ज्ञान और विद्या भी अनादि है। यह जगत् परिवर्तनशील है, परन्तु इस सृष्टि के नियम जो प्रभु ने बनाये हैं वे सब अपरिवर्तनशील व अनादि हैं, परमेश्वर इन नियमों का नियन्ता है। उसका एक भी नियम ऐसा नहीं जो Eternal अनादि व नित्य (अनश्वर) न हो। ऋषि दयानन्द के वैदिक दर्शन की महानता, विलक्षणता, उपयोगिता तथा प्रासंगिकता का बोध इसी से हो जाता है। हमारे अधिकांश वक्ता इस विषय पर बोलते हुए इसे छूते ही नहीं।

एक बार नागपुर के एक महासम्मेलन में मुझे भी इसी विषय पर बोलना पड़ा। मैंने पहला वाक्य यह कहा, ''क्या कभी किसी ने यह प्रश्न उठाया है कि आज के युग में चाँद की, सूर्य की, पृथिवी की गति की, सूर्य के पूर्व से उदय होने की, दो+दो=चार, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन की, कर्मफल सिद्धान्त की, प्रभु की दया, प्रभु के न्याय की, व्यायाम की, दूध-दही के सेवन की, गणित के नियम की, भौतिकी शास्त्र के Laws (नियमों) की क्या प्रासंगिकता है?''

जो इस प्रश्न को उठायेगा, उसका उपहास ही उड़ाया जायेगा। इस प्रकार त्रैतवादी विचारक महर्षि दयानन्द के सन्देश, उपदेश 'वेद अनादि ईश्वर का अनादि ज्ञान है' को सुनकर जो उसकी प्रासंगिकता का प्रश्न उठाता है तो उसे कौन बुद्धिमान् कहेगा? एक सेवानिवृत्त प्राध्यापक मुझे बाजार में मिल गया। वार्तालाप में उसने एक बात कही, ''वैज्ञानिक चाँद पर घूम आये। उपग्रह से भ्रमण करते रहते हैं। कहीं उन्हें Hell और Heaven नरक व स्वर्ग नहीं दिखे। कहीं किसी ने हूरें नहीं देखीं, फरिश्ते नहीं देखे........।''

मित्रो! जो चमत्कार मानते थे उनको लिखित रूप से मानना पड़ रहा है कि किसी पैगम्बर ने कोई चमत्कार नहीं किया। धर्म अनादि काल से है। युग-युग में ईश्वर नया ज्ञान नहीं देता। ऐसा साहित्य छप रहा है। ऐसे लोगों से पूछो कि आज के युग में उनके ग्रन्थों व पन्थों की क्या प्राासंगिकता है? विस्तार से कभी फिर कुछ लिखूँगा। आशा है हमारे बड़े-बड़े विद्वान् नये फ़ैशन के इस सम्मेलन से समाज को बचायेंगे।

हमारे पूजनीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तो पण्डित चमूपति जी की यह तान सुनाया करते थे:–

जुग बीत गया दीन की शमशीर ज़नी का।
है वक्त दयानन्द शजाअत के धनी का।।

पूज्य मीमांसक जी और परोपकारिणी सभा:– कुछ विचारशील मित्रों से सुना है कि एक अति उत्साही भाई ने श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक के नाम की दुहाई देकर, सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन की आड़ लेकर परोपकारिणी सभा तथा उसके विद्वानों व अधिकारियों पर बहुत कुछ अनाप-शनाप लिखा है। किसी को ऐसे व्यक्ति की कुचेष्टा पर बुरा मनाने की आवश्यकता नहीं। आज के युग में लैपटॉप आदि साधनों का दुरुपयोग करते हुए बहुत से महानुभाव यही कुछ करते रहते हैं। आर्य समाज में धन का उपयोग यही है कि एक ही लेख को सब पत्रों में छपवा दो।

केजरीवाल व राहुल से कुछ युवकों ने यही तो सीखा है कि जैसे मोदी को कोसकर वे मीडिया में चर्चित रहते

हैं, आप परोपकारिणी सभा को कोसकर और सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन पर अपनी रिसर्च का शोर मचाकर चर्चा में रहो। विधर्मियों से टक्कर लेने का इनमें साहस कहाँ? **बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा?**

धर्मप्रेमियों को पूज्य मीमांसक जी व परोपकारिणी सभा विषयक कुछ और प्रेरक घटनायें बताते हैं।

१. लोकतन्त्र में किन्हीं बातों पर विचार-भेद की सम्भावना तो सम्भव है। मन-भेद व सिद्धान्त-भेद अहितकर है। पूज्य मीमांसक जी से परोपकारिणी सभा के अधिकारी व विद्वान् यदा-कदा मिलने जाते रहते थे। श्री धर्मवीर जी उनके दर्शनार्थ तथा विचार-विमर्श के लिये उनके पास गये। धर्मवीरजी ने ऋषि के कुछ पत्र खोजकर छपवा दिये थे। मीमांसक जी इससे गद्‌गद हो गये। आपके पास कुछ और नये पत्र थे, जो ट्रस्ट के नहीं बल्कि पण्डित जी की खोज व पुरुषार्थ का फल थे। श्री धर्मवीर जी को इन पत्रों का पता नहीं था। **आपने अत्यन्त उदारता व आत्मीयता से ये पत्र डॉ. धर्मवीर जी को भेंट कर दिये। यह भी कहा, मैंने यह पत्र किसी को दिखाये भी नहीं। इनकी सुरक्षा के लिये आपसे उपयुक्त और कोई व्यक्ति मेरे ध्यान में नहीं है।**

पण्डित जी इन्हें बेचकर पैसा कमा सकते थे। किन्तु आपने अपने प्यारे धर्मवीर जी को यह आर्ष सम्पदा सौंप दी।

२. धर्मवीर जी पण्डित जी के दर्शन करने गये। किसी विषय पर कुछ विचार करना था। पण्डित जी से एक दुर्लभ ग्रन्थ दिखाने को कहा। उस अलमारी की चाबी पण्डित जी के पास ही रहती थी। ऐसी ज्ञान-सम्पदा तक हर किसी की पहुँच होनी भी नहीं चाहिये। परोपकारिणी सभा के ज्ञानकोश की तस्करी ऐसे ही तो होती रही।

धर्मवीर जी की विनती सुनकर पूज्य मीमांसक जी ने झट से वह अलभ्य ग्रन्थ उन्हें दिखा दिया।

३. पण्डित जी ने अपनी टिप्पणियों से युक्त सत्यार्थप्रकाश छापा। उसमें 'जप' विषय के प्रसंग में 'मन' शब्द की बजाय जन्म कर दिया और बड़ी लम्बी विचित्र टिप्पणी दे दी। शुद्ध को अशुद्ध कर दिया।

श्री विरजानन्द जी उनके चरणों में उपस्थित हुए, कहा, ''यह क्या कर दिया महाराज?'' विचार-विमर्श हुआ। श्रद्धेय मीमांसक जी को अपनी भूल पर बड़ा दु:ख हुआ। विरजानन्द जी को अपार प्रसन्नता हुई कि हमारे श्रद्धेय मीमांसक जी ने भूल का सुधार करना मान लिया।

४. पूज्य पण्डित जी अपने ग्रन्थों के लेख व विशेषाङ्कों के लिये इस विनीत से भी विचार-विमर्श व पत्र-व्यवहार करते रहते थे। सत्यार्थ प्रकाश के सम्पादन व प्रकाशन के समय कुछ स्थलों पर मेरे साथ विचार न कर सके। आपने उसमें लिख दिया कि चौदहवें समुल्लास में कुरान की आयतों के अर्थ महर्षि ने अपने तैयार करवाये गये हिन्दी कुरान (अप्रकाशित) से दिये हैं। मेरा ध्यान पण्डित जी के इस कथन पर गया। मैं बहालगढ़ पहुँचा। कहा, ''गुरुजी! यह क्या लिख दिया? सत्यार्थ प्रकाश की अन्त:साक्षी का प्रमाण दिया, श्री स्वामी वेदानन्द जी, दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी, स्वामी योगेन्द्रपाल जी, देहलवी जी आदि विद्वानों के प्रमाण तथा कोर्टों के निर्णय सुनाये तो झट से बोले, ''यह तो भयंकर भूल हो गई। अब तो अगले संस्करण में ही सुधार होगा।''

इस भेंट के पश्चात् भूल स्वीकार करने के उनके साहस को उनकी महानता बताते हुए मैंने 'परोपकारी' तथा 'दयानन्द सन्देश' में लेख दिये। ऐसा करना आवश्यक था अन्यथा विरोधी लाभ उठाते।

५. पण्डित जी के निधन से पूर्व परोपकारिणी सभा के कई ट्रस्टी, कई विद्वान् कई बार उनके स्वास्थ्य का पता करने जाते रहे। ये बातें बनाने वाले कितनी बार गये? उनसे अन्तिम भेंट जब हुई तो 'रसाला एक आर्य' मूल उर्दू पुस्तक की खोज करने का मुझे आदेश देते हुए कहा, ''सब कार्य छोड़कर पहले इसे करो। यह महर्षि की लिखवाई पुस्तक है। इसे फिर से तैयार (अनुवाद-सम्पादन) करके यह पुस्तक छपवा दो। आर्यसमाज को बता दो कि सब प्रश्नों के उत्तर ऋषि जी द्वारा लिखवाये गये हैं। यह ला. साईंदास रचित पुस्तक नहीं है। कोई असाधारण विद्वान् ही इतने ग्रन्थों के प्रमाण व उत्तर दे सकता है।''

ईश्वर कृपा से उनके निधन के शीघ्र पश्चात् वह पुस्तक अकस्मात् मिल गई। मैंने यह हिन्दी में छपवाकर पूज्य पण्डित जी को समर्पित कर दी। उनका आदेश हुआ तो

उनकी प्रेरणा से सम्पूर्ण जीवन चरित्र-महर्षि दयानन्द भी दो खण्डों में छपवा दिया।

पण्डित जी के निधन के पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने पता दिया कि उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी संस्करण में 'दौड़ा सपुर्द' शब्द एक से अधिक बार आया है। ऐसा कोई शब्द है ही नहीं। शब्द था 'दौर सपुर्द' ऐसे ही बाईबल के एक अवतरण में वे भूल कर गये। डॉ. सुरेन्द्र जी ने भूल का सुधार करके आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया,उपहास से बचाया।

रामलाल कपूर ट्रस्ट से पता किया जा सकता है कि पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक की शोकसभा में परोपकारिणी सभा के तो कई विद्वान् पहुँचे और किसी सभा से एक भी व्यक्ति न पहुँचा। सम्भवत: यह चर्चा छेड़ने वाले भाई भी नहीं पहुँचे थे। यह एक ऐसी शोक सभा थी जिसके दो अध्यक्ष थे। दोनों परोपकारिणी सभा के...............। केवल परोपकारिणी सभा ने उनके निधन पर एक श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन आयोजित किया। रामलाल कपूर ट्रस्ट ने उसकी अध्यक्षता के लिये मेरा ही नाम सुझाया। मैंने तथा श्री डॉ. धर्मवीर जी ने कहा, ''अध्यक्ष ट्रस्ट का होना चाहिये।'' हमने विचार करके आचार्य प्रदीप जी को उस सभा का अध्यक्ष बनाया।

पूज्य पं. सत्यानन्द जी को श्रद्धेय मीमांसक जी अगली पीढ़ी का सबसे बड़ा आर्ष ग्रन्थों व व्याकरण का विद्वान् मानते थे। सभा ने उन्हें आदरपूर्वक अपना न्यासी चुना है। कभी एक भद्रपुरुष ने ऋषि मेले पर उन्हें ब्रह्मा ही न बनने दिया। स्वामी सर्वानन्द-युग में उनका ध्यान इधर दिलाया गया। धर्मवीर जी ने बार-बार उन्हें यज्ञ का ब्रह्मा बनाया। रामलाल कपूर ट्रस्ट में अलभ्य स्रोत हर किसी की पहुँच में न हों, यह नियम पूज्य मीमांसक जी के समय में भी था। इसके न होने से सार्वदेशिक के पुस्तकालय का नाश हो गया। सब तस्करी हो गई।

परोपकारिणी सभा ने ही तो 'परोपकारी' द्वारा बताया कि ऋषि के शास्त्रार्थ-संग्रह में भयङ्कर अशुद्धियाँ हैं। क्या यह सुधार सभा का आलोचक मण्डल कर सकता है? जिसने कभी विधर्मियों से लिखित व मौखिक शास्त्रार्थ नहीं किया, ऐसे गुणी पहलवान परोपकारिणी सभा को शास्त्रार्थ की चुनौती देते सुने गये। सभा का पत्र विरोधियों के उत्तर देने में प्रमाद नहीं करता। आक्षेप करने वालों को सभा रोक नहीं सकती। उनका भगवान् भला करे।

ये प्रश्न कोई नये नहीं हैं:-दो प्रश्न किन्हीं लोगों ने हमारे आर्य युवकों से पूछे हैं। हर वस्तु को बनाने वाला,जगत् को बनाने वाला और हमें बनाने वाला जब परमात्मा है तो फिर परमात्मा को बनाने वाला कौन है? यह प्रश्न इस्लाम, ईसाई मत से तो पूछा जा सकता है। हम वैदिकधर्मी तो ईश्वर, जीव व प्रकृति को अनादि मानते हैं। यह ऊपर बताया जा चुका है। श्री लाला हरदयालजी ने भी Hints For Self Culture पुस्तक में यह प्रश्न उठाया है। बनी हुई वस्तु (मिश्रित) का तो कोई बनाने वाला होता है। ईश्वर, जीव व प्रकृति (अपने मूल स्वरूप में) अमिश्रित हैं। इनको बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता। पूरे विश्व में सारे वैज्ञानिक अब एक स्वर में यह घोषणा कर रहे हैं कि प्रकृति को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही इसका नाश होता है। इस युग में यह ऋषि की बहुत बड़ी वैचारिक विजय है। यह हमारी एक मूल मान्यता है।

दूसरा प्रश्न भी बड़ा विचित्र है। जब जीव व प्रकृति भी अनादि हैं, जैसे कि परमात्मा, तो फिर परमात्मा उनसे बड़ा कैसे? प्रभु इनको नियन्त्रण में कैसे करता है? प्रश्न तो अच्छा है, परन्तु पढ़े-लिखे प्रश्नकर्त्ता यह भूल जाते हैं कि नियन्त्रण करने का आयु से कोई सम्बन्ध ही नहीं। मौलवी लोग चाँदापुर शास्त्रार्थ के समय से यह कहते आ रहे हैं कि जब जीवों को प्रभु ने पैदा ही नहीं किया तो फिर वह हमारा मालिक (स्वामी) कैसे हो सकता है।

अध्यापक ने विद्यार्थियों को पैदा नहीं किया। शासक प्रशासक आयु में भले ही छोटे हों, बड़ी आयु की प्रजा पर उन्हीं का नियन्त्रण होता है। संसार में गुणों से, योग्यता से, बल से दूसरों को वश में रखा जाता है। अपने खेतों को, मकान को, सामान को क्या हमने पैदा किया है? हम उसके स्वामी कहलाते हैं। पूज्य देहलवी जी ने पानीपत के एक शास्त्रार्थ में अपने प्रतिपक्षी मौलवी के इसी प्रश्न के उत्तर में कहा था, क्या तुम्हारी बीवी को तुमने पैदा किया है? वह आपके वश में है। आप उसके मालिक कहलाते हो। ठाकुर अमरसिंह जी ने मौलवी सनाउल्ला को घेरते हुए कहा कि आप जॉर्ज छठे से आयु में बड़े हैं, परन्तु सम्राट् की प्रजा के नाते उसके नियन्त्रण में हैं। घोड़ा आयु में बड़ा

होता है फिर भी छोटी आयु का सवार उससे काम लेता है। इन बातों पर विचार करने से शंका का समाधान हो जाता है।

'ज़वाले हैदराबाद और पुलिस ऐक्शन':- सन् १९८८ में श्री राजीव गाँधी के काल में इस नाम की घातक, विषैली तथा देश के लिए सर्वथा अपमानजनक एक पुस्तक हैदाराबद में छपी थी। संसद सदस्य ओवैसी जी मजलिस इत्तहाद उलमुसलमीन के सर्वमान्य नेता हैं और आज श्री राहुल व केजरीवाल की पंक्ति में खड़े सबसे अधिक भाषण देने वाले राजनेता हैं। इस पुस्तक का लेखक इसी पार्टी का नेता कासिम रिज़वी देशद्रोही का अंगरक्षक व एक सेनापति रहा है। हैदराबाद के भारत में विलय को हैदराबाद का पतन बताया गया है। नेहरु जी का तो गुणगान किया गया है। सरदार पटेल, भारतीय सेना व भारतवर्ष को कोसते हुए इन्हें अन्यायी सिद्ध किया गया है। भारत में हैदराबाद के लिये की गई कार्यवाही को पशुतापूर्ण व दानवता सिद्ध किया गया है। क्यों आज तक काँग्रेस ने इस पुस्तक के बारे में चुप्पी साध रखी है। क्या केजरीवाल इसके बारे में ओवैसी से झड़प लेगा? क्या इसका लेखन व प्रकाशन देशद्रोह नहीं है। कासिम रिज़वी को सबसे बड़ा जिहादी बताकर महिमामण्डित किया गया है। पुस्तक २०८ पृष्ठ की है। यह कोई ट्रैक्ट नहीं। इसमें यह भी सप्रमाण दिया गया है कि नेहरु जी तो हैदराबाद की शक्ति से भयभीत थे। सरदार ने उसी हैदराबाद को तीन दिन में रौंद डाला।

काँग्रेस का पंजा किसका हाथ?:- देश की राजनीति में कुछ लोगों को धर्मनिरपेक्षता के दौरे Fits पड़ते ही रहते हैं। अभी-अभी श्री राहुल ने अपने एक विचित्र भाषण में काँग्रेस के चुनाव निशान को गुरु नानक, महावीर स्वामी व हज़रत अली सबका हाथ बताकर वोट बटोरने के लिये धार्मिक उन्माद का कार्ड खेला है। हज़रत मुहम्मद का हाथ बताने से न जाने राहुल कैसे चूक गया।

काँग्रेस का चुनाव निशान तो यह था ही नहीं। वह तो दो बैलों की जोड़ी था। यह निशान तो इन्दिरा जी का था। राहुल को इतिहास पढ़ना चाहिए। मौलाना आजाद और मनमोहन सिंह व सिब्बल जी से ही पूछ लिया होता। काँग्रेस का नारा था:-

''न जात पर न पात पर। इन्दिरा जी के हाथ पर''

गली-गली में यह नारा गूँजा था। इन्दिरा जी के हाथ को राहुल ने किस-किस का हाथ बता दिया। यह अनर्थकारी गंदी राजनीति है। देश को इससे बचाना चाहिये। झूठ तो झूठ ही है।

इतिहास का हस्ताक्षर-महाशय कृष्ण जी का पत्रः- श्री धर्मवीर जी ने 'परोपकारी' में इतिहास के 'हस्ताक्षर' शीर्षक से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी Feature (रूप-लेख) आरम्भ किया था। जिसके दूरगामी परिणाम निकले। साहित्यकारों ने इसकी महत्ता व उपयोगिता का लोहा माना। इसी के अन्तर्गत बनेड़ा के राजपुरोहित श्री नगजीराम की डायरी के कुछ पृष्ठ, वीर भगतसिंह, स्वामी वेदानन्द जी के हस्ताक्षर और श्री सुखाड़िया का आर्यसमाज ब्यावर के नाम पत्र छापे। इनमें से कुछ सामग्री कई विद्वानों के ग्रन्थों में स्थान पा चुकी है।

आर्यसमाज के अग्नि-परीक्षा काल के एक अभियोग पटियाला के महाशय रौनक राम जी शाद के केस के बारे में पूज्य महाशय कृष्ण जी का १०२ साल पुराना एक ऐतिहासिक पत्र परोपकारी में छपा। मेरे पास ऐसे कई महापुरुषों के पत्र व दस्तावेज हैं। परोपकारी में इनके प्रकाशन से इतिहास की सुरक्षा हो जायेगी।

पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या का पत्रः- परोपकारिणी सभा के आरम्भिक काल के मन्त्री श्री पण्ड्या मथुरा निवासी का एक पत्र मई १८८६ के आर्य समाचार मेरठ के पृष्ठ ४५-४८ तक छपा मिलता है। सभा ने व समाजों ने पण्डया जी को ऋषि-जीवन के लिखने का कार्य सौंपा। आपने इस दायित्व को लेकर ऐसे कई पत्र तत्कालीन आर्यपत्रों में प्रकाशित करवाये। पण्ड्या जी मन से तो पोप ही थे, ऊपर से वैदिक धर्मी व ऋषि-भक्त बने हुये थे। एक भी पृष्ठ नहीं लिखा। ऋषि जीवन की खोज के लिये घर से निकलकर भटकना, कष्ट सहन करना ऐसे लोगों के बस में कहाँ। कोई लेखराम ही धर्म-रक्षा व धर्मप्रचार के लिए जान जोखिम में डाल सकता है। बाबू लोग घर में कुर्सी पर बैठे-बैठे लेख लिखकर रिसर्च की धौंस जमाते हैं। वर्षों तक समाजों के अधिकारी रहने वाले कभी अड़ोस-पड़ोस में किसी ग्राम में नये स्थान पर जाकर कभी धर्मप्रचार करने का कष्ट नहीं उठाते। इस प्रकार से तो इतिहास नहीं बना करता।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

अविद्या का नाश करो - अथर्ववेद -

-शिवनारायण उपाध्याय

न्यायदर्शन में महर्षि गौतम कहते हैं कि जन्म के प्रारम्भ से ही प्राणी दु:ख भोगना प्रारम्भ कर देता है, इसलिए मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिये कि वह मृत्यु पर विजय प्राप्त करे। मृत्यु पर विजय प्राप्त करना तभी संभव है जब प्राणी जन्म लेना बन्द कर दे, क्योंकि जब तक जन्म है तब तक मृत्यु भी है और दु:ख भी है। प्रश्न है कि प्राणी के जन्म लेने का कारण क्या है?

उत्तर दिया जाता है कि जन्म लेने की प्रवृत्ति। प्रवृत्ति का कारण है राग-द्वेष आदि और राग-द्वेषों का कारण है अविद्या। जब तक प्राणी अविद्या के चक्कर में फँसा रहेगा, वह राग-द्वेषादि से मुक्त नहीं हो सकेगा। राग-द्वेषादि से यदि वह मुक्त नहीं हो सका तो प्रवृत्ति से नहीं बचेगा और जन्म-मरण में फँसा रहेगा। इसलिए मनुष्य का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है कि वह अविद्या का नाश करे, अविद्या से मुक्त होवे। अविद्या का नाश हो जाने पर राग-द्वेषादि का भी नाश हो जायेगा। राग-द्वेष के नष्ट हो जाने पर प्रवृत्ति भी नहीं बनेगी और प्रवृत्ति के नष्ट हो जाने पर जन्म भी नहीं होगा, जन्म नहीं होने पर मृत्यु भी नहीं होगी। अथर्ववेद में अविद्या के नाश करने का उपाय काण्ड ३ सूक्त १८ तथा २५ में बताया गया है।

इमां खनाम्योषधिं वीरूधां बलवत्तमाम्।
यया सपत्नी बाधते यया संविन्दते पतिम्।।

- अथर्व. ३.१८.१

अर्थ- (वीरुधाम्) उगती हुई लताओं (सृष्टि के पदार्थों) में (इमाम्) इस (बलवत्तमाम्) बड़ी बल वाली (ओषधिम्) रोगनाशक ओषधि (ब्रह्म विद्या) को (खनामि) मैं खोदता हूँ (यया) जिस (ओषधि) से (प्राणी) (सपत्नीम्) विरोधिनी (अविद्या) को (बाधते) हटाता है और (यया) जिससे (पतिम्) सर्वरक्षक वा परमेश्वर को (संविन्दते) यथावत् पाता है।

उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति।
सपत्नी मे परा णुद पतिं मे केवलं कृधि।।

- ऋ. ३.१८.२

अर्थ- (उत्तानपर्णे) हे विस्तृत पालन करने वाली! (सुभगे) हे बड़े ऐश्वर्य वाली! (देवजूते) हे विद्वानों द्वारा प्राप्त की गई! (सहस्वति) हे बलवती! (ब्रह्मविद्या) (मे) मेरी (सपत्नीम्) विरोधिनी (अविद्या) को (परा णुद) दूर हटा दे और (पतिम्) सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को (मे) मेरा (केवलम्) सेवनीय (कृधि) कर।

भावार्थ- ब्रह्म-विद्या सबका पालन करने वाली है। बड़े ऐश्वर्य की स्वामिनी है! विद्वान् गण ही उसे प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्म-विद्या के प्राप्त हो जाने पर उसकी विरोधिनी अविद्या नष्ट हो जाती है। इसके साथ ही वह विद्वान् परमेश्वर का ही भक्त बन जाता है।

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ।
परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि।।

- अथर्व. ३.१८.३

अर्थ-(हे सपत्नी अविद्या) (ते) तेरा (नाम) नाम (नहि) कभी नहीं (जग्राह) मैंने लिया है। (अस्मिन्) इस (पतौ) जगत्पति परमेश्वर में (नो) कभी नहीं (रमसे) तू रमण करती है। (पराम्) वैरिणी (सपत्निम्) विरोध करने वाली (अविद्या) को (परावतम् एव) बहुत ही दूर ही (गमयामसि) हम पहुँचाते हैं।

भावार्थ- विद्वान् लोग अविद्या को कभी भी सम्मान नहीं देते हैं, उसे कभी स्मरण भी नहीं करते हैं। परमपिता परमेश्वर में अविद्या का वास नहीं है, इसीलिए परमात्मा-परायण विद्वानों से भी अविद्या दूर ही रहती है। मनुष्य तो संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। वह परिश्रमपूर्वक विद्या को प्राप्त करके अविद्या को हटा देता है।

उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः।
अध सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः।

- अथर्व ३.१८.४

अर्थ- (उत्तरे) हे अति उत्तम! (ब्रह्म विद्या) (अहम्) मैं (उत्तरा) अधिक उत्तम हो जाऊँ। (उत्तराभ्य:) अन्य उत्तम (पशु आदि) से (इत्) तो (उत्तरा) अधिक उत्तम हूँ। (मम) मेरी (या) जो (अधरा) नीच (सपत्नी) विरोधिनी

(अविद्या) है (सा) वह (अधराभ्य:) नीच (विपत्तियों) से (अध:) नीची है।

भावार्थ- मनुष्य सभी प्राण्यिों में श्रेष्ठ है तथा ब्रह्म-विद्या प्राप्त करके वह श्रेष्ठतर हो जाता है। अविद्या सभी प्रकार की विपत्तियों से नीची है अर्थात् अविद्या से अधिक कष्टप्रद कोई भी दूसरी विपत्ति नहीं है। इसे हटाकर ही मनुष्य आनन्द प्राप्त कर सकता है।

अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहि:।
उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नी मे सहावहै।।

- अथर्व. ३.१८.५

अर्थ- मैं जयशील हूँ और तू (ब्रह्म विद्या) भी जयशील है। हम दोनों जयशील होकर मेरी विरोधिनी अविद्या को जीत लें। यदि मनुष्य परमात्म चिन्तन में लगा रहे तो अविद्या नष्ट हो जाती है।

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम्।
मामनु प्रे ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु।।

- अथर्व. ३.१८.६

अर्थ- (हे जीव)! (ते) तेरे लिए (सहमानाम्) प्रबल (अविद्या) को (अभि) हटाकर (अधाम्) मैंने रखा है। (ते) तेरे लिए (सहीयसीम्) अधिक प्रबल (ब्रह्म विद्या) को (उप) आदर से (अधाम्) मैंने रखा है। सो (मन:) तेरा मन (माम् अनु) मेरे पीछे (योगी के रूप में) (प्रधावत्) दौड़ता रहे और (गौ: इव) जैसे गौ (वत्सम्) अपने बछड़े के पीछे और (वा: इव) जैसे जल (पथा) अपने मार्ग में दौड़ता है।

भावार्थ- चिन्त वृत्तियों के निरोध से अविद्या को जीतकर, अपनी और परमात्मा की शक्ति को जानकर, मनुष्य अविद्या से दूर हट जाता है। वह ब्रह्म-विद्या की तरफ ऐसे दौड़ जाता है जैसे गाय अपने बछड़े के पीछे दौड़ती है अथवा जल अपने मार्ग में बहता है।

इसी प्रकार सूक्त २५ में भी अविद्या को हटाने को कहा गया है।

उत्तदस्त्वोत् तुदतु मा धृथा: शयने स्वे।
इषु: कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि।।१।।

अर्थ- (हे अविद्या) (उत्तुद:) तेरा उखाड़ने वाला (विद्वान्) (त्वा) तुझको (उत् तुदत्) उखाड़ दे। (स्वे शयने) अपने-अपने स्थान (हृदय) में (मा धृथा:) मत ठहर। (कामस्य) सुकामना का (या) जो (तेरे लिए) (भीमा) भयानक (इषु:) तीर है (तया) उससे (त्वा) तुझको (हृदि) हृदय में (विध्यामि) बेधता हूँ।

भावार्थ- विद्वान् व्यक्ति अपने ब्रह्मचर्य और तपोबल द्वारा अविद्या को हृदय से निकाल देवे। जैसे वीर योद्धा तीर द्वारा शत्रु का हृदय छेद देते हैं, वैसे ही विद्वान् विद्या रूपी तीर से अविद्या का नाश कर देवे।

योगी बुद्धि-बल द्वारा अविद्या को हटा देता है।

आधीपर्णां कामशल्यामिषुं संकल्पकुल्मलाम्।
तां सुसंनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि।। २।।

(आधी पर्णाम्) प्रतिष्ठा के पंख वाले (कामशल्याम्) तपोबल की अणि वाले (संकल्प कुल्मलाम्) संकल्प में दण्ड छिद्र वाले (ताम्) उस (प्रसिद्ध, बुद्धिरूपी) (इषुम्) तीर को (सुसंनताम्) ठीक-ठीक लक्ष्य पर सीधा (कृत्वा) करके (काम:) सुन्दर मनोरथ (त्वा) तुझ (अविद्या) को (हृदि) हृदय में (विध्यतु) बींधे।

भावार्थ- बुद्धि बल से अविद्या को हटा ब्रह्मचारी और योगी प्रतिष्ठावान् और सत्य संकल्पी होते हैं। मुण्डक उपनिषद् में इसी विषय को इस प्रकार व्यक्त किया है।

प्रणवो धनु: शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्।।

- मुण्डक २.२.४

(प्रणव:) ओ३म् (धनु:) धनुष (आत्मा हि) आत्मा ही (शर:) तीर और (ब्रह्म) ब्रह्म (तल्लक्ष्यम्) उसका लक्ष्य (उच्यते) कहा जाता है। (अप्रमत्तेन) अति सावधान होकर (मनुष्य) (वेद्धव्यम्) बेधे और वह (शरवत्) तीर के समान (तन्मय:) उसमें लय (भवेत्) हो जावे।

या प्लीहानं शोषयति कामस्येषु: सुसंनता।
प्राचीनपक्षा व्योषा तया विध्यामि त्वा हृदि।।

- अथर्व. ३.२५.३

अर्थ- (कामस्य) सुन्दर कामना का (सुसंनता) ठीक-ठीक लक्ष्य पर चलाया हुआ (प्राचीन पक्ष) प्राचीन (वेद विद्या) का पंख रखने वाला (व्योषा) विविध प्रकार से (अविद्या का) दाह करने वाला (बुद्धि रूपी) (या) जो (इषु:) तीर (अविद्या की) (प्लीहानम्) गति को

(शोषयति) सुखा देता है (तया) उससे (त्वा) तुझ (अविद्या) को (हृदि) हृदय में (विध्यामि) बेधता हूँ।

भावार्थ- मनुष्य वेद-विद्या के द्वारा ही अविद्या को हटा सकता है।

अब यह विद्या हम कहाँ से प्राप्त करें जो अविद्या को हटा देवे।

आजामि त्वाजन्या परि मातुरथो पितुः।
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि।।

- अथर्व. ३.२५.५

अर्थ-(हे विद्या)! (त्वा) तुझको (आजन्या) पूरे उपाय से (अपनी) (मातुः) माता से (अथो) और (पितुः) पिता से (परि) सब ओर (आ) यथानियम (अजामि) प्राप्त करता हूँ। (यथा) जिससे (मम) मेरे (क्रतौ) कर्म अथवा बुद्धि में (असः) तू रहे। (मम चित्तं) मेरे चित्त में (उपायसि) तू पहुँचती रह।

भावार्थ- मनुष्य अपने माता-पिता और गुरुजनों से विद्या प्राप्त करता है तथा बुद्धिपूर्वक कर्म करता है तो उसकी बुद्धि में विद्या स्थायी रूप में निवास करती है। इति शम्।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें।

- मन्त्री

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, **२**. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में **३**. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

परमेश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' ही क्यों?

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दि. २६/०६/२००१ को दिया गया व्याख्यान है, इस व्याख्यान में ईश्वर के स्वरूप और उसके नाम ओ३म् का विवेचन बड़ी ही दार्शनिक शैली से किया गया है।

-सम्पादक

पिछले अंक का शेष भाग.....

कल्पना करें कि परमेश्वर ने इस संसार को बनाया, मान लो हम किसी नई जगह में जाकर खड़े हैं, हम बिल्कुल अनजान हैं और वहाँ सब कुछ है, लेकिन हमें यह नहीं मालूम कि कौन क्या है, हमें पता नहीं कि कौन चपरासी है, हमें यह मालूम नहीं कि कौन अधिकारी है, हमें यह पता नहीं कि कौन पढ़ा-लिखा है, हमें यह मालूम नहीं कि कौन मालिक है, हमें यह पता नहीं कि कौन नौकर है, तो ऐसी स्थिति में जब तक कोई बताने वाला न हो, तब तक हम उससे कैसे व्यवहार करेंगे? कैसे सम्बन्ध बनाएंगे? तो इसके लिए मनु महाराज ने कहा कि जब इस धरती पर मनुष्य अन्तिम अवतार के रूप में आया और उसने इस बिखरे हुए संसार को देखा, तब इस संसार में सब कुछ तो था, हवा थी, पानी था, फल थे, पुष्प थे, अन्न था, जानवर थे। सब कुछ था, लेकिन उसके व्यवहार करने का जो सूत्र था, वह उसके हाथ में नहीं था। हाँ, उसको परमेश्वर ने वेद का सूत्र दिया हुआ था।

वेद उसके ज्ञान में था और संसार उसके सामने था। अब सवाल यह उठता था कि मैं इसको मिलाऊँ तो कैसे मिलाऊँ? कौन-सी चीज़ किस पर ठीक बैठती है। तो मनु महाराज कहते हैं कि '**सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्। वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।**' कहते हैं कि परमेश्वर ने इधर ज्ञान दिया और उधर संसार दिया। परमेश्वर ने इधर आँख दी, उधर सूर्य दिया। वैसे ही परमेश्वर केवल बुद्धि देता और ज्ञान नहीं देता तो अधूरा होता और केवल सूर्य देता और आँख नहीं देता या केवल आँख देता और सूर्य नहीं देता, तब भी बात नहीं बनती। जैसे सूर्य का आँख से सम्बन्ध है, वैसे ही बुद्धि का ज्ञान से सम्बन्ध है। सूर्य दिया है, तो आँख भी दी है। आँख मेरे अंदर है और सूर्य बाहर इस संसार में है। बुद्धि मेरे पास है और ज्ञान बाहर से मुझे मिला है, क्योंकि वह भी स्वाभाविक ज्ञान नहीं है, नैमित्तिक ज्ञान है। तो परमेश्वर ने वेद के रूप में मुझे ज्ञान दिया और मैं इसका उपयोग कर सकता हूँ। जैसे प्रकाश को देखकर संसार की वस्तुओं को देख सकता हूँ, जान सकता हूँ, वैसे ही मैं अपनी बुद्धि के द्वारा प्राप्त ज्ञान से इस संसार को समझ सकता हूँ।

तो फिर मनुष्य ने इस संसार को कैसे समझा था? मनु कहते हैं कि उसने सबसे पहले 'सर्वेषां' अर्थात् यूँ नहीं है कि दो-चार नाम बता दिये हों, ऐसा नहीं है कि दो-चार वस्तुओं का ज्ञान दे दिया हो और बाकी तू खुद कर लेना। **सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्**- उसने सबसे पहले समस्त वस्तुओं के नाम और वस्तुओं के कर्म का ज्ञान दिया। **वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।** स्रोत है वेद। शब्द वेद में है, वस्तु संसार में है और ऋषियों ने शब्दों का जो अर्थ जिस वस्तु में घटता था, उस वस्तु को उस शब्द से पुकारा। यह सिर्फ संस्कृत भाषा की ही विशेषता है, दूसरी भाषा में यह बात नहीं आयेगी। जो भी शब्द हमारे पास हैं, उनके साथ यही बात घटेगी।

''अग्नि'' शब्द का सीधा-सा, मोटा-सा अर्थ है- आग, लेकिन अग्नि एक भाव है, एक गुण है, वह गुण जहाँ-जहाँ भी मिलेगा, उसका वहाँ-वहाँ प्रयोग होगा। हमको लगता है कि ऐसा शायद हम नहीं करते, लेकिन जिस भाषा को हम जन्म से जानते हैं, उसमें हम इस तरह के प्रयोग करते हैं।

एक दिन की बात है, उत्सव हो रहा था। अजमेर में ऋषि मेले का आयोजन चल रहा था। मैं बाहर दरवाजे पर खड़ा हुआ था। इतने में बाहर से एक व्यक्ति आया। उससे किसी ने पूछा कि स्वामी ओमानन्द जी कहाँ है? आपको आश्चर्य होगा कि व्यक्ति ने क्या कहा? हरियाणा का व्यक्ति था वह। वह बोला ''यू आग-सी जाण लागरी।'' गेरुवे कपड़े पहने हुए व्यक्ति को देखकर बोले-ये आग-सी जा

रही है न, उसी का नाम ओमानन्द है। यहाँ पर आग का तो कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन उसकी जो रक्तिमा है, उसका जो भगवापन है, उसके आधार पर उसने कहा कि जो आग-सी जा रही है, इसको ओमानन्द कहते हैं। आप कहते हो कि अमुक व्यक्ति आग उगलता है। कोई आग उगलता है क्या? लेकिन हमको क्या कभी संदेह होता है कि आग नहीं उगलता? गुस्से में जब आदमी बोलता है, तब वह आग उगलता है। उसका प्रयोग ठीक लगता है, कभी गलत नहीं लगता, लेकिन यही प्रयोग जब हम संस्कृत में करते हैं तो आपको गलत लगता है, आपको कुछ अटपटा लगता है। क्यों? क्योंकि हमारा संस्कृत से उतना सम्बन्ध नहीं है, इसलिए जितने कर्म जिस वस्तु में दिखाई दिये, हमारे ऋषियों ने उस वस्तु का वह नाम रखा। इसके विस्तार में नहीं जाते, क्योंकि यहाँ तो एक-एक वस्तु के सौ-सौ नाम हैं। हम निघण्टु पढ़ते है। इसमें जल के सौ नाम हैं। पृथ्वी के इक्कीस नाम हैं। ये सब क्यों हैं? इन सबके पीछे एक कारण है। जिसने निरुक्त पढ़ा है, जिसने व्याकरण पढ़ा है, वह जानता है कि किसी शब्द का किसी अर्थ से क्या सम्बन्ध है। इस तरह सबसे पहले हमने नाम का फैसला किया तो वेद से किया। जब अन्य वस्तुओं के नाम हमें वेद से मिले और हमने उन वस्तुओं के गुणों को, उन वस्तुओं के स्वरूप को, उन वस्तुओं के कर्मों को उन शब्दों के अर्थों में देखा, झाँका, पाया। तो वैसे ही परमेश्वर का जो नाम है, उसमें परमेश्वर के सारे गुण और उसके स्वरूप का वर्णन होना चाहिए। इसलिए परमेश्वर का और कोई दूसरा नाम नहीं हो सकता, क्योंकि माँ का दायित्व निभाये तो पिता का रह जायेगा और पिता का करे तो माँ का रह जायेगा, माता-पिता का करें तो गुरु का रह जायेगा, लेकिन परमेश्वर तो माता, पिता, गुरु सब कुछ है। तो सब कुछ होने वाला अर्थ परमेश्वर के नाम में होना चाहिए, इसलिए वह कहता है कि ओ३म् परमेश्वर का मुख्य और निज नाम है।

मुझे एक बार बड़ा संदेह हुआ कि योग दर्शन में **ओ३म्** नहीं लिखा, ''**तस्य वाचकः प्रणवः**'' ये लिखा। मैं बड़े संदेह में पड़ा। हम हर जगह कहते हैं कि ओ३म् है- ओ३म् है- ओ३म् है। प्रणव कहने से तो बात नहीं बनी तो इसका समाधान मुझे मिला छान्दोग्य उपनिषद् में। इसमें तीन नाम हैं ओ३म् के- ओ३म् है, उद्‌गीथ है, प्रणव है। **तज्जपस्तदर्थभावनम्,** क्योंकि यदि नाम का अर्थ से सम्बन्ध नहीं है तो अर्थ की भावना कैसे करोगे? क्योंकि राम, राम, राम जाप करने पर जो चित्र आयेगा, जो अर्थ की भावना बनेगी, वह पूरे अयोध्या की बनेगी, इसलिए आप उस इतिहास को याद रखना चाहते हैं तो जप कर सकते हैं। आप शिव के इतिहास को याद रखना चाहते हो तो शिव का जप कर सकते हैं। और जैसे एक माँ- जो किसी बच्चे को याद करती रहती है तो बच्चे के गुण, बच्चे के कार्य याद आते हैं। एक बच्चा अभी आपने कहीं भेजा, कहीं यात्रा पर गया, कहीं पढ़ने गया और आप उसे विदा करके आये। उसके बाद उसकी याद आपके मन में बनी रही। हर समय यह सोचते रहते हैं कि ऐसा कर रहा होगा, ऐसा रह रहा होगा, सो रहा होगा इत्यादि।

नाम का चिंतन करते हुए यदि परमेश्वर के कार्य याद आते हैं तो मान लीजिए कि आप परमेश्वर का चिंतन कर रहे हैं, लेकिन यदि उस नाम का चिंतन करते हुए आपके मन में कोई और इतिहास याद आ रहा हो तो आप कैसे परमेश्वर का चिंतन कर रहे हैं? और जितने हमारे पास नाम हैं, उनसे क्या किसी भी नाम से ये याद आता है कि तूने इस संसार को बनाया है या इस संसार को चला रहा है? ऐसा हमको ध्यान नहीं आता है। हम तो जो कथानक, जो कहानी, जो इतिहास सुनते हैं, वही याद आयेगा। इस दृष्टि से ये राम, कृष्ण, शिव परमेश्वर के वाचक हो सकते हैं, लेकिन उसका मुख्य नाम नहीं हो सकते, इसलिए परमेश्वर का मुख्य और निज नाम ओ३म् है। एक जगह कठोपनिषद् में बड़ी अच्छी चर्चा है। वह कहता है कि इसका परमेश्वर नाम कैसे है? कहता है कि जो वेद कहते हैं, जो शास्त्र कहते हैं, जो ऋषि कहते हैं, वही ''**ओ३म् इत्येतत्।**'' वह ओ३म् है और वहाँ एक विशेषण दिया गया है -**एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्। एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।** (कठोपनिषद्) यहाँ पर एक प्रश्न है कि हम यह बात क्यों मान लें? जो बात ऋषि कह रहे हैं, जो दयानन्द कह रहे हैं, या जो शास्त्र कह रहे हैं, वह बात हम क्यों मान लें? हम वह बात क्यों

नहीं मानें जो पुराण कह रहा है, जो हमारा आज का पंडित कह रहा है, जो हमारा पुरोहित कह रहा है, जो तुलसी रामायण कह रही है? क्योंकि हम वो मानेंगे तो वैसा आचरण करेंगे, ये मानेंगे तो ऐसा आचरण करेंगे। इसका उत्तर आचार्य चरक की एक पंक्ति में है– **रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ता तपोज्ञानबलेन ये, येषात्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा। आप्ताः शिष्टाः विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्, सत्यं वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः।।** अर्थात् जिसको आप प्रमाण मानते हो, वह कैसा होना चाहिए? हमारे जो ऋषि लोग हैं, वे क्यों प्रामाणिक हैं? पहली बात ये है कि वे ज्ञानी हैं, वे मूर्ख नहीं हैं और कैसे ज्ञानी हैं? आचार्य चरक के शब्दों में– रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ता।

हर मनुष्य तीन गुणों से युक्त है– सत्व, रज और तम। हमारे ऋषि रज और तम से परे हैं। क्यों परे हैं? –''**तपोज्ञान बलेन**'' तप से और ज्ञान से। तप और ज्ञान के अभाव में रज और तम की निवृत्ति नहीं होती। यथार्थ ज्ञान से आदमी वास्तविकता के दर्शन कर सकता है। यदि अज्ञान से युक्त है या मोह से युक्त है तो वह तम और रज गुण से युक्त होगा ही। इसका परिणाम क्या है? **'येषां त्रिकाल........ सदा'।** उनका ज्ञान त्रिकाल में निर्मल होता है, त्रिकाल में भी संदेह नहीं होता है, उसकी गति कभी रुकती नहीं है। जो कभी चिंता करने के लिए, विचार करने के लिए, संदेह करने के लिए रुकता नहीं है, जो सीधा है, प्रवहमान है, ऐसे लोगों को हम 'आप्त' कहते हैं। इनको शिष्ट कहते हैं, इनको ज्ञानवान् कहते हैं। **'सत्यं वक्ष्यन्ति.........स्तमाः'।** जिसके अंदर रजोगुण नहीं है, जिसके अंदर तमोगुण नहीं है, जो सतोगुण से ओतप्रोत है, वह असत्य कभी बोल ही नहीं सकता। इसलिए जो बात ऋषि बोलते हैं, वह बात गलत नहीं है, इसलिए जो बात विद्वानों ने कही है, मनुष्यों ने कही है और ऋषियों ने कही है, उनमें किसकी बात मानी जानी चाहिए? ऋषि की, विद्वानों की नहीं। विद्वान् क्या करता है? ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में एक सवाल उठाया है कि ऋषि कौन है? और विद्वान् कौन है? ऋषि वह होता है जो सामने वाले के हित के लिए बोलता है। विद्वान् वह होता है जो अपने हित के लिए बोलता है। हम प्रायः विद्वान् होते हैं। अपनी बात करने में भरोसा रखते हैं। हम बात को ऐसे कहना चाहते हैं कि लगे कि बहुत जानता है, ऐसे लगे कि इसको बहुत आता है। वह ये कोशिश नहीं करता कि सामने जो बैठा है, उसकी समझ में आता है कि नहीं? ऋषि बोलता है कि सामने वाले को ध्यान में रखकर, सामने वाले के हित को ध्यान में रखकर, सामने वाले के लक्ष्य को ध्यान में रखकर बोलना चाहिए। विद्वान् और चतुर आदमी अपने हित को, अपने लाभ को ध्यान में रखकर बोलता है, इसलिए ऋषि हो ही वो सकता है जो परोपकार करने वाला हो, परोपकार की भावना वाला हो। वह विद्वान् हो सकता है, चतुर हो सकता है, सफल हो सकता है, लेकिन ऋषि नहीं हो सकता। इसलिए ऋषि सत्य ही बोलेंगे, असत्य बोलने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि उनके यहाँ रजोगुण और तमोगुण का निशान भी नहीं है। दूसरा वे विद्वान् भी हैं और उनके द्वारा पक्षपात होने की संभावना भी नहीं है। और तीसरी बड़ी बात यह है कि वे मेरे पूर्वज हैं, अर्थात् जब मैं अपने बच्चे को कुछ कहूँगा तो ये सोचकर कभी नहीं कहूँगा कि इसका नुकसान हो। मैं अज्ञान में उसकी हानि कर सकता हूँ, अविवेक से नुकसान हो सकता है, लेकिन मेरी इच्छा कभी भी उसका नुकसान करने की नहीं होगी। कल्पना करो– ऋषि आपको कहते हैं कि शास्त्र पढ़ने में समय लगाओ, यज्ञ करने में समय लगाओ, दान देने में श्रम करो। क्या ऋषि आपका नुकसान चाहते हैं? क्या वह आपका घाटा चाहते हैं? आपके समय की बर्बादी चाहते हैं? ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि ऋषि विद्वान् हैं, वह पक्षपात से रहित हैं और हमारे पूर्वज हैं, हमारे पिता, पितामह हैं। वह हमारा अहित कभी नहीं सोच सकते, गलती कहीं हमारी समझ में है, इसलिए कोई बात जब यहाँ कही जाती है तो वह इसलिए सही है कि वह ऋषियों ने कही है और काल की कसौटी पर खरी उतरी है। बिगाड़ तो मध्यकाल में अविद्वान् लोगों ने, पक्षपाती लोगों ने, नासमझ लोगों ने उसमें पैदा किया है। यदि उसको आप हटा दें, यदि उसे मूल रूप में देखें, ऋषि की बताई हुई बात को यथावत समझें तो हम ये बात अनुभव करेंगे कि उसमें से हित के अतिरिक्त कोई दूसरी बात हो ही नहीं सकती, इसलिए वे कहते हैं कि ऋषि जो बात कहते हैं वह प्रामाणिक है, वह स्वीकार्य है, वह काल की कसौटी

पर खरी है। क्योंकि मोटी-सी बात है कि हम अपने पूर्वजों के अनुभव को साथ में लेकर चलते हैं और जो व्यक्ति साथ में लेकर नहीं चलेगा, उसको दोबारा अनुभव करने पड़ेंगे और नुकसान उठाना पड़ेगा।

उज्जैन की बात है, वहाँ ओमप्रकाश अग्रवाल हुआ करते थे, अब उनका देहान्त हो गया है। मैं उनके पास बैठा हुआ था। वे कपड़े की दुकान करते थे, उनको आख्यातिक बहुत अच्छा आता था। उन्होंने मुझसे कहा कि क्या तुमने आख्यातिक छापा है, इसमें बहुत गलतियाँ हैं। मेरा माथा चकराया, मैंने देखा एक आदमी कपड़ा बेच रहा है और वह ये बोल रहा है कि आपके आख्यातिक में ये गलतियाँ हैं। गलतियाँ कोई विद्वान् बता देता, कोई विद्यार्थी बता देता तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता, लेकिन मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि एक व्यक्ति जो दिनभर कपड़ा बेच रहा है, वह व्यक्ति मुझे आख्यातिक और धातु पाठ की गलती बता रहा है। मैंने जब उनसे पूछा कि अग्रवाल जी, आपको आख्यातिक पढ़ने का समय कब मिलता है? तब उन्होंने बताया कि जब मैं दुकान में बैठता हूँ तो ये बच्चे जवान हैं और ये मेरी बात मानते नहीं है। क्योंकि मैं जो बात अनुभव की कहता हूँ, वह बात ये दिमाग की कहते हैं। ये समझते हैं कि इस दो घण्टे में दो रुपये का फायदा हुआ तो अगले दो घंटे में चार का होना चाहिए और मेरा अनुभव ये कहता है कि ऐसा होगा नहीं और मैं इनको कहता हूँ तो ये इसको मानते नहीं, इसलिये मैं इस झगड़े से बचने के लिए संस्कृत पढ़ता हूँ। मतलब ये कि वे समय निकालते थे और स्वाध्याय करते थे।

स्वाध्याय से हमको ये पता लगता है कि कौन-सी बात सही है और कौन-सी गलत। शास्त्र में कोई ऐसी बात नहीं होती जो हमारे से परे है या हमारे काम की नहीं है। वास्तव में शास्त्र होता ही वह है जो हमारे लिए है। हम जब अनुभव से सीखते हैं, तब हमें अपना शास्त्र बनाना पड़ता है और जब हम दूसरों के अनुभव से सीखते हैं, तब हम शास्त्र पढ़ रहे होते हैं, इसलिए मर्जी आपकी है, यदि शास्त्र पढ़कर काम में ले लेते हैं तो अपने अनुभव में हानि और समय के नुकसान से बच सकते हैं। चाहो तो आजमाकर देख लो। आजमायेंगे तो हो सकता है कि जिन्दगी में आपको वह बात मिले भी और न भी मिले, लेकिन शास्त्र से मान लोगे तो आपका सारा जीवन बच जायेगा। इसलिए हमारे ऋषि कहते हैं कि हमने शास्त्रों के माध्यम से अपने अनुभव को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखा है, आप उसको पढ़ते जाइये और आगे बढ़ते जाइये।

इसलिए कृष्ण जी कहते हैं कि **तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ, ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।।** शास्त्र कोई अटपटी चीज नहीं है। आपके लिए बेवकूफी भरी या बेकार चीज नहीं है। जैसे आप अपनी दुकान का अनुभव रखते हो, जैसे आप अपनी रसोई का अनुभव रखते हो, जैसे आप अध्यापन का अनुभव रखते हो, वैसे ही शास्त्र आपके जीवन का अनुभव है। आप उसको पढ़कर काम करेंगे तो वैसे ही लाभान्वित होंगे, जैसे आप किसी अनुभवी व्यक्ति के साथ रहकर किसी कार्य को जल्दी सीख सकते हैं और बिना गलती के सीख सकते हैं। इसलिए शास्त्र बिना गलती से जीने का नाम है। यदि हम चाहते हैं कि हम बिना गलती के जियें, तो हमें शास्त्र पढ़ना चाहिए। **सर्वे वेदाः यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।(कठोपनिषद् वल्ली २- मं. १५)** हम तपस्या करते हैं, किसलिए करते हैं? उस तपस्या का एक भाव, एक ही आधार- ओ३म् होना चाहिए।

कई वर्षों, कई जीवन तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए किसी चीज को प्राप्त करना चाहते हो तो सार वही होगा जो छोटे-से छोटा होता जायेगा अर्थात् जब आप वेद से आये तो आप गायत्री मंत्र को ही पर्याप्त मानते हो। **'ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम्।'** यह दुनिया क्या है? ओ३म् का ही व्याख्यान है, सूत्र है और सूत्र का व्याख्यान महाभाष्य है। वह कहता है कि सारा संसार ओ३म् है और इतना ही नहीं, भूत भी वही है, वर्तमान भी वही है, भविष्य भी वही है। इतना ही नहीं, इन तीन कालों से भी परे यदि कोई चीज हो तो वह भी ओ३म् ही है, अर्थात् सारे संसार को अपने अंदर समेटे हुए है।

ईशोपनिषद् में भी है कि वह सबकी आत्मा में है और सबकी आत्मा उसमें है। जो यह जानता है कि सबमें

वह है और उसमें सब है, ये जो व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है, ये किसी वस्तु का हो ही नहीं सकता, क्योंकि दुनिया में जितनी वस्तुएँ हैं वे किसी एक में रह सकती हैं, पर वह एक सब में नहीं रह सकता। मछली पानी में है, लेकिन पानी मछली में नहीं रह सकता है। इसी तरह से जो चीज कहीं बाहर है, स्थूल है तो वह सबके अंदर समाविष्ट नहीं है, लेकिन परमेश्वर क्या है? परमेश्वर सब में है और सब कुछ परमेश्वर में है, अर्थात् इतना तो सूक्ष्म है कि वह सब के अन्दर है और इतना बड़ा है कि सबके बाहर है। जब हम बाहर होते हैं तो भीतर नहीं होते और भीतर होते हैं तो बाहर नहीं होते, लेकिन परमेश्वर ऐसा है जो सब के भीतर भी है और सबके बाहर भी है, इसलिए वह व्याप्त होता है।

जीव समस्त स्थूल वस्तुओं में सूक्ष्म है, लेकिन परमेश्वर इससे भी सूक्ष्म है, इसलिए वह जीवात्मा के भीतर भी व्याप्त होकर रहता है। जब हम यह कहते हैं कि सब कुछ ओ३म् ही है तो इसका मतलब यह कभी नहीं होता कि दूसरा नहीं है। इस बात को स्वामी जी ने बहुत अच्छे से समझाया है। मतलब अद्वैत गलत नहीं है। अद्वैत का मतलब है कि जब हमारी नजर एक पर ही टिक जाए तो निश्चित रूप से दूसरे से हमारी नजर हट जाती है। हमको कोई एक पसंद आ जाए तो दूसरे का हमको पता ही नहीं रहता कि वह है या नहीं है। हमारे लिए तो दुनिया में बस एक ही है, यही तो अद्वैत है, पर इस अद्वैत से आप दूसरों के अस्तित्व को नकार कैसे सकते हैं? ये कब कहा कि दूसरा नहीं है? आप कहते हैं कि मेरा बेटा तो बस मेरा ही है, बेटा तो बस एक ही है। इसका ये मतलब है क्या कि दुनिया में बेटा ही नहीं है या दुनिया में माँ नहीं है। ऐसा नहीं है। यह मेरी बुद्धि है, मेरा चिंतन है मेरे अपने विचार हैं कि मुझे दूसरा कोई दिखाई नहीं देता। यह दूसरा जब दिखाई नहीं दे रहा है, यही तो अद्वैत है।

दुकान में जब बैठते हैं तो ग्राहक के जेब के सिवाय कुछ दिखता है क्या? नहीं दिखता। यह अद्वैत नहीं तो क्या है? यह अद्वैत है। मतलब जब हम किसी बात पर अपने-आपको केन्द्रित कर लेते हैं तो हम अद्वैत में चले जाते हैं। कोई भी काम करते हुए कौन आया, कौन गया, हमको पता ही नहीं चलता। ऐसे ही जब परमेश्वर के सामने हम भूल जायें कि दूसरी भी कोई चीज है तो हम अद्वैत की स्थिति में चले जाते हैं। हम दुकान में व्यस्त हैं, हम रोटी ही भूल जाते हैं, हम भोजन करना भूल जाते हैं। तो यह जो हमारी अद्वैत की स्थिति है, उसको जानना हो तो अद्वैत की स्थिति में आना चाहिए।

हम समझते हैं इस दुनिया में दूसरे हैं ही नहीं, इसलिए वह अकेला है। ऐसा नहीं है, यह समझ का फेर है। आचार्य रजनीश ने एक जगह प्यारी बात लिखी है। आचार्य रजनीश बहुत बुद्धिमान् व्यक्ति था। वह मानता क्या है? कुछ भी नहीं मानता, आप जो पढ़ोगे, वही मानता है। आपके सामने जो बोलेगा, वही मनवा लेगा। उसका अपना क्या है? कुछ भी नहीं है, क्योंकि यह बुद्धिमत्ता का खेल है। उन्होंने एक जगह कहा-भगवान महावीर ने जब साधना की और समाधि लगाई तो समाधि के बाद उन्होंने महसूस किया कि यह सब संसार व्यर्थ है, बिल्कुल ऐसे ही जैसे साँप के लिए केंचुली छोड़ने के बाद उसका अपना स्वरूप रहता है तो उन्होंने अपने कपड़े उतार दिए। शिष्यों ने समझा कि सारा रहस्य इसी बात में है अपने कपड़े उतार दो। भगवान् बुद्ध ने भी जो बात कही, हमारे जैसे उनके शिष्यों ने स्थूल बात तो पकड़ ली और उसका सूक्ष्म स्वरूप हमारे चिन्तन में नहीं आ सका, क्योंकि हम उस धरातल पर थे ही नहीं, इसलिए अद्वैत का धरातल होने पर भी हमारी पकड़ में नहीं आता। हम अद्वैत कैसे मान सकते हैं, जब तक हमारे मन में दो हैं। हम सिद्धांत से अद्वैत मान रहे हैं और व्यवहार में द्वैत में चल रहे हैं, वह अद्वैत नहीं होता। व्यवहार जब अद्वैत का हो जाये, तब हम अद्वैतवादी बनेंगे और व्यवहार में अद्वैतवादी तब बनेंगे, जब हमें उस भगवान् के अलावा और कोई दीखना बंद हो जायेगा।

एतदालम्बनं श्रेष्ठतमदालम्बनं परम्।

- संकलनकर्त्ता, सुधीर गुप्ता, बिलासपुर।

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जिज्ञासा समाधान - १२९

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- निवेदन है कि जनवरी (द्वितीय) २०१७ के अंक के सम्पादकीय के अन्तर्गत ''वेद एक है अथवा चार'' लेख लिखा हुआ है। चारों वेद अलग-अलग ऋषियों पर अवतरित हुए हैं (ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त)। धारणा यह है कि वेद एक ही है, वेद व्यास जी ने विषयान्तर्गत चार भागों में विभाजित किया है। ऋग्, यजु, साम व अथर्व इन चारों का नामकरण वेद व्यास जी ने किया है। यह सत्य है अथवा काल्पनिक? कृपया स्पष्ट करके मेरी शंका समाधान करके अनुगृहीत करें। **- रामचन्द्र, गुलाबबाड़ी, अजमेर।**

समाधान- वेद का पवित्र ज्ञान प्राणी मात्र के लिए पवित्र परमात्मा ने मनुष्यों को दिया है। वेद का ज्ञान परमेश्वर ने आदि सृष्टि में ऋषियों के अन्त:करण में अपनी प्रेरणा से दिया। वेद को समझने के लिए व्याकरण आदि अंग, उपांग व ऋषियों के अन्य शास्त्र, ऋषियों की शैली का ज्ञान होना चाहिए, साथ ही धार्मिकता, जितेन्द्रियता, ईश्वर के प्रति निष्ठा आदि का होना आवश्यक है।

बिना योग्यता के वेद के विषय में जो जानना चाहता है, जानता है, वह वेद को ठीक से नहीं समझ सकता। ऐसा व्यक्ति वेद के विषय में भ्रान्ति फैला सकता है। वेद के विषय में कुछ अयोग्य और कुछ स्वार्थी लोगों ने बहुत-सी भ्रान्तियाँ फैलाई हैं।

वेद को केवल कर्मकाण्ड का ही ग्रन्थ मानना, वेद में इतिहास मानना, वेद को ऋषियों की रचना मानना, वेद को चार-पाँच हजार वर्ष पहले का मानना भी एक भ्रान्ति ही है।

वेद ज्ञान को महर्षि व्यास ने विभक्त नहीं किया, अपितु इसका विभाग तो स्वयं परमपिता परमेश्वर ने ही किया है। ऋग्, यजु, साम, अथर्व ये सब नाम परमात्मा के ही रखे हुए हैं। जहाँ मन्त्र संहिताओं की बात आती है, वहाँ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को ही वेद पदवाच्य से कहा जाता है। वेद का विभाग महर्षि व्यास ने नहीं किया, इसके अनेकों प्रमाण वेद व अन्य ऋषियों के मिलते हैं। वे प्रमाण हम यहाँ दे रहे हैं-

१. तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

- ऋ. १०.९०.९/यजु.३१.७

२. तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

- अथर्व. १९.६.१३

३. यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।।

- अथर्व १०.७.२०

४. यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।

- यजु. ३५.५

५. शरीरं ब्रह्म प्राविषदृचः सामानो यजुः।

- अथर्व १.१०.२३

ये सभी प्रमाण वेद के हैं, जिससे ज्ञात होता है कि वेद का विभाग स्वयं परमेश्वर ने किया है। अब ऋषियों के प्रमाण-

६. एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः-सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।

- बृ. उप. २.४.१०

७. अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः।

- शतपथ. ११.५.३

८. अग्नेर्ऋचो वायोर्यजूंषि सामान्यादित्यात्।

- छान्दोग्य

९. ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमथर्वणं चतुर्थम्।

- छा. ७.१.२

१०. स तथा वाचा तेनात्मनेपदं सर्वमसृजत्।
यदिदं किञ्च-ऋचो यजूंषि सामानि छन्दानि।।

– बृ. १.२.५

११. अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थं ऋग्यजु:सामलक्षणम्।।

– मनु. १.२३

१२. तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्ववेद:।

– मुण्डक-१.१.५

इन सभी प्रमाणों में कहीं ऐसा नहीं है कि वेदों का विभाजन महर्षि व्यास ने किया हो। इन प्रमाणों से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो रहा है कि परमात्मा ने ही विभाजन किया है। वेद एक ही होता तो पृथक्-पृथक् नाम से चार ऋषियों को ज्ञान न देकर एक ही को परमात्मा दे देता। एक को न देकर एक-एक वेद का ज्ञान एक-एक पृथक्-पृथक् ऋषियों को दिया है।

महर्षि व्यास के विषय में ऋषिवर दयानन्द क्या लिखते हैं देखिए-

''........क्योंकि जो व्यासकृत ग्रन्थ हैं, उनका सुनना-सुनाना व्यास जी के जन्म के पश्चात् ही हो सकता है, पूर्व नहीं। जब व्यास जी का जन्म भी नहीं था तब भी वेदार्थ को पढ़ते-पढ़ाते, सुनते-सुनाते थे.......................जो व्यास जी ने वेद पढ़े और पढ़ाकर वेदार्थ फैलाया, इसलिए उनका नाम 'वेदव्यास' हुआ, क्योंकि व्यास कहते हैं वार-पार की मध्य रेखा को, अर्थात् 'ऋग्वेद' के आरम्भ से लेकर 'अथर्ववेद' के पार पर्यन्त चारों वेद पढ़े थे और शुकदेव तथा जैमिनि आदि शिष्यों को पढ़ाये भी थे, नहीं तो उनका नाम 'कृष्णद्वैपायन' था, जो कोई यह कहते हैं कि ''वेदों को व्यास जी ने इकट्ठा किया'' यह बात झूँठी है, क्योंकि व्यास जी के पिता, पितामह, प्रपितामह, पाराशर, शक्ति और वशिष्ठ और ब्रह्मा आदि ने भी चारों वेद पढ़े थे, यह बात क्योंकर घट सके?''

महर्षि दयानन्द के इन वचनों से स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि महर्षि वेदव्यास ने वेदों का विभाग नहीं किया अपितु यह विभाग तो पूर्व से ही चला आया है।

इस प्रकार की भ्रान्ति अज्ञानी लोग फैलाते रहते हैं, इसलिए इनकी बातों पर विश्वास न कर ऋषियों का अनुसरण करें और अपनी समस्त भ्रान्ति निवारण करें। अलम्।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में

बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु

सम्भाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १४ मई २०१७ रविवार से २१ मई २०१७ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : २८ मई २०१७ रविवार से ०४ जून २०१७ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०, ८८२३९४५९५६

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि . दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/-   पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

२. महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/-   पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/-   पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/-   पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/-   पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

६. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/-   पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

द्वितीय शताब्दी में प्रवेश

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

परोपकारिणी सभा द्वारा १९८३ में ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाई गई, उसके पश्चात् स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा लिखा गया यह लेख किसी भी पूर्वाग्रह से परे है। आर्यसमाज की उत्तरोत्तर होती अवनति के कारणों एवं उनके निवारण पर एक कटाक्षपूर्ण लेख आर्यों के लिये चिन्तन योग्य होगा। -**सम्पादक**

हम सब मिलकर अजमेर में महर्षि निर्वाण शताब्दी मना चुके हैं-महर्षि दयानन्द के देह-त्याग की। इसे चाहे आप निर्वाण शताब्दी कहें, चाहे बलिदान शताब्दी। ऋषि हमारे लिए जिये, हमारे लिए मरे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण दूसरों के लिए बलिदान था। आज वे हमारे समक्ष नहीं हैं-आँखों से ओझल हो गए, दीये की बत्ती बुझ गयी-कहाँ गयी, हम नहीं जानते। यह हमारे जानने और परखने का विषय भी नहीं है। प्रत्येक आस्थावान् व्यक्ति अपने प्रवर्त्तक या आचार्य को यही मानता है कि मृत्यु के बाद वह आवागमन के बन्धन से मुक्त हो गया। यदि ईसा मुक्त हो सकता है,यदि बुद्ध मुक्त हो सकता है, यदि राम और कृष्ण जीवन के अनन्तर मुक्त हो सकते हैं, तो हम ही क्यों सोचें कि महर्षि १८८३ ई. की दीपावली के बाद मुक्त नहीं हुए, उनका निर्वाण नहीं हुआ। किन्तु जन्म-मृत्यु और बन्ध-मुक्ति की व्यवस्था परमात्मा के हाथ में सदा रही है और सदा रहेगी-मृत्यु के कुछ पूर्व मरणासन्न प्राणी प्रभु में आस्था रखते हुए कहता है- **विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्**- हे प्रभो ! तुम ही हमारे समस्त कर्मों को जानते हो, अर्थात् एकमात्र तुमको अधिकार है कि हमारे समस्त कर्मों को देखते हुए तुम निर्णय करो कि इस जीवन के बाद हमारे हित में हमारा जाना कहाँ उचित होगा।

-**अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्।**

ऋषि दयानन्द की महत्ता थी कि उन्होंने आर्यसमाज का कार्य किसी व्यक्ति विशेष को नहीं सौंपा। उन्होंने कोई प्रमुख उत्तराधिकारी शिष्य नहीं बनाया। प्रभु की महती कृपा है कि ऋषि दयानन्द की मृत्यु के सौ वर्ष बाद भी आर्यसमाज सक्रिय और सचेष्ट संस्था के रूप में जीवित है। आर्यसमाज के समस्त संघटनों ने मिलकर निर्वाण शताब्दी में भाग लिया। इस संघटन में जितना ऐक्य होना चाहिए था, वह पूरा तो न हो पाया-जितना हो सका उसके लिए बधाई। जिनका सहयोग हम न पा सके, अथवा जिन्हें अलग संघटित होकर बलिदान शताब्दी मनानी पड़ी- उन्हें भी हमारी बधाई।

बहुधा इन समारोहों के तीन ही विशेष कार्यक्रम हैं, जिनमें हमारी रुचि बढ़ी है- १. वेदपारायण यज्ञ, २. लंगर, ३. शोभायात्रा। इन तीनों में यदि आशातीत सफलता मिल जाये तो हम सन्तुष्ट हो जाते हैं। गत २५ वर्षों में वेदपारायण यज्ञों की धूम बढ़ी है और सिक्ख भाइयों की देखा-देखी लंगर की भी और शोभायात्रा की भी। इन तीनों पर मैं आलोचना नहीं करना चाहता, पर संकेत से कुछ कहूँगा।

१. वेदपारायण यज्ञ-यह स्मरण रखना चाहिए कि वेद-पारायण ब्रह्ममहायज्ञ-का अंग है, न कि देवयज्ञ का। सामूहिक रूप से आद्योपान्त किसी भी वेद के मन्त्र से आहुति देना वेद और यज्ञ दोनों के साथ परिहास है। यह ठीक है कि ऐसा करना कोई पाप नहीं है, पर यदि हमारे आचार्यगण इन यज्ञों के साथ जनता में अन्धविश्वास का प्रचार करा देंगे, तो अनौचित्य होगा। 'पूर्णाहुति' के लिए जनता को प्रलोभ दिलाना और उनके सहयोग से नयी रूढ़ियाँ प्रचलित करना हमारे लिए भविष्य में चिन्त्य विषय बन जाएगा। इसलिए मैं सावधान करना चाहता हूँ।

२. लंगरों का प्रचलन-लंगरों के प्रचलन में कोई हानि नहीं है। अतिथि-यज्ञ है-इतने मेहमानों को खिलाने में व्यवस्था करना व्यय-साध्य अवश्य है, पर लंगरों द्वारा हमें धनीमानी व्यवसायियों का जो सहयोग मिल जाता है, वह हमारे संघटन के लिए हितकर है।

३. शोभायात्रा-आर्यसमाज की गतिविधियों के प्रति नगरवासियों को अवगत कराने का यह शुभ अवसर है। विद्यालय के छात्रों और छात्राओं को सम्मिलित करने में एक छोटी-सी हानि है-ये युवक आर्य-परिवार के अंग नहीं हैं। अनुशासन के आतंक से स्कूल के अधिकारी इन्हें

जुलूसों में लाते हैं। आज हमारे विद्यालयों में न अध्यापिकायें, न अध्यापक और न शिक्षार्थी आर्यसमाज के साथ हैं-इस दृष्टि से हमारी शोभायात्रा का प्रदर्शन हमारे दारिद्र्य का प्रदर्शन ही रह जाता है। हमें चाहिए कि युवकों-युवतियों (छात्रों और छात्राओं) के मध्य में आर्यसमाज के प्रति आकर्षण उत्पन्न करें। यह कार्य आर्यकुमार सभा, आर्य नवयुवक सभा और आर्य युवती सभा संघटित करके ही किया जा सकेगा। प्रत्येक आर्यसमाज और आर्य स्त्री समाज के संरक्षण में विद्यार्थियों से सम्बन्ध रखनेवाली आर्ययुवक सभाओं और आर्ययुवती सभाओं की स्थापना को प्रोत्साहन दीजिए। अन्यथा अगली पीढ़ियों में आर्यसमाज का संघटन अत्यन्त कमजोर पड़ जायेगा।

यह भी स्मरण रखिये कि आर्ययुवक सभाओं और युवती सभाओं का काम आर्यवीर दलों से नहीं चलेगा। दोनों प्रकार के संघटनों के उद्देश्य और लक्ष्य पृथक्-पृथक् हैं।

आगे के प्रश्न-समारोहों की धूमधाम से हमें मिला क्या? आर्यसमाज की गतिविधि को संघटित करने की आवश्यकता है। पिछले सौ वर्षों में दरिद्र आर्यसमाज ने करोड़ों रुपये की सम्पत्ति भीख माँगकर जुटा ली है। १००० के लगभग आर्य संस्थाओं की इमारतों का मूल्य ही करोड़ों रुपया है। **प्रथम शती इस सम्पत्ति को जुटाने के लिए विख्यात रही, किन्तु अगली शती इस सम्पत्ति से उत्पन्न कलह और झगड़ों को मिटाने में समाप्त हो जाए-मुझे ऐसी कुछ आशंका लगती है।** त्याग और पुरुषार्थ से हमने जो कुछ इकट्ठा किया, उसे अब द्वेष और गृहकलह में हम गवाँ देंगे-इसकी सम्भावना लगती है। आप स्वयं सोचिये, कि क्या आपको अपनी संस्थाओं से सन्तोष है? क्या हमें इस धन की लोलुपता पथ-भ्रष्ट नहीं कर रही? क्या हम इस सम्पत्ति के लिए न्यायालयों के द्वार नहीं खटखटा रहे? क्या यह सम्पदा हमारे लिए विपदा तो नहीं बन रही? यदि ऐसा हो गया है, तो उपाय क्या है-सोचिये!

मैं बहुधा कहा करता हूँ, कि आर्यसमाज को अपरिचितों और बाहरवालों से भय नहीं है। आज हम स्वयं अपने भविष्य के निर्माण में बाधक हैं? हमारा योग अच्छा रहा, किन्तु क्षेम बुरा।

ऐसी स्थिति में क्या आप बता सकते हैं कि सन् २०८३ ई. में द्वितीय निर्वाण शताब्दी समारोहों को मनाने के लिए हम जीवित रहेंगे? जब अजमेर में हमने निर्वाण अर्द्धशताब्दी मनाई थी (१९३३ में), तो देश परतन्त्र था, पर एक विशेषता थी-लाहौर वाले और पेशावर वाले भी अजमेर आये थे। १९२५ की महर्षि की जन्म शताब्दी के अवसर पर मथुरा में भी हम उसी उत्साह से आये थे। १९४७ में देश स्वतन्त्र हो गया- पर देश छोटा रह गया- विभाजन के फलस्वरूप। अब सन् २०२५ में क्या होगा, और २०७५ में क्या होगा, और २०८३ में क्या होगा-आबाल-वृद्ध हम सब मिलकर यह सोचें। देश की स्थिति सन्दिग्ध है, और आर्यसमाज की स्थिति तो और भी अधिक सन्दिग्ध। १९८३ के समय तक युगाण्डा में आर्यसमाज समाप्त हो गया। सन् २०२५ तक दक्षिण अफ्रीका में भी आर्यसमाज समाप्त हो जायेगा और शायद नैरोबी और दारेसलाम में भी आर्यसमाज न रहेगा। ज़ंज़ीबार में अब आर्यसमाज के खण्डर ही हैं। गयाना, फिजी और सूरिनाम में भी यही होगा। फिर समारोहों में कौन आयेगा? मॉरिशस, ट्रिनिडाड और सूरिनाम में यहाँ समस्त सुधारों का काम आर्यसमाजों ने और आर्यबन्धुओं ने पराधीनता के दिनों में किया था, वहाँ स्वाधीनता के दिनों में आर्यसमाज की शक्ति का क्यों ह्रास हो रहा है-वहाँ हिन्दुओं के अन्धविश्वास फिर क्यों पनप रहे हैं-क्या आप इन प्रश्नों पर विचार करेंगे? और यही अवस्था भारतवर्ष में भी क्यों हैं? १९४७ के पूर्व तक हमने जो सुधार के काम किए थे, वे क्यों अब शिथिल पड़ गए? सोचिए! नये बाबा, नये अवतार, नये भगवान्, नये अन्धविश्वास, ग्रहों और हस्तरेखाओं के नये चक्र क्यों पल्लवित हो रहे हैं? राष्ट्रीयता के स्थान पर साम्प्रदायिकता क्यों हमारे सार्वजनिक जीवन में अभिशाप बनकर तेजी से आ रही है- इन प्रश्नों पर आपको किसी दिन तो गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा। इस पर विचार राष्ट्रीय संस्थाओं को भी करना पड़ेगा, सुधार संस्थाओं को भी और आर्यसमाज जैसी संस्था को तो विशेष रूप से। यह स्मरण रखिये कि यदि आर्यसमाज जीवित है, तो राष्ट्र भी जीवित रहेगा, और विश्व की मानवता भी। अन्यथा राष्ट्रों के कुटिल चक्र और सम्प्रदायवादिता हमें पूर्ण विनाश की ओर ले जावेगी।

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०**

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA. AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

धर्म का आधार ब्रह्म है

– धर्मवीर

जन सामान्य धर्म की परिभाषा नहीं जानता, वह तो परम्परा और रूढ़ियों को धर्म समझता है, उसी की पालना में रत रहता है। जो मनुष्य जितना स्थूल बुद्धि का होता है, वह उतने स्थूल रूप को धर्म के रूप में देखता है। वस्तुत: धर्म व्यवहार है और सिद्धान्त ज्ञान, विचार या सत्य है। एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ नहीं रहता, ज्ञान के बिना होने वाला धर्म निष्फल होता है, धर्म के बिना ज्ञान अनुपयोगी है। धर्म के सम्बन्ध में ज्ञान का अभिप्राय आत्मिक ज्ञान है। आत्मिक ज्ञान का मार्ग दर्शनशास्त्र है। इस कारण धर्म और दर्शन एक-दूसरे के पूरक हैं। वही धर्म श्रेष्ठ धर्म हो सकता है, जिसका दर्शन उच्च कोटि का है। भारतीय दर्शन की पराकाष्ठा आध्यात्मिक ज्ञान में निहित है, इसी कारण भारतीय धर्म संसार का सर्वश्रेष्ठ धर्म है। आत्म-ज्ञान से धर्म का मार्ग प्रशस्त होता है। आत्मज्ञान धर्म को आलोकित करता है। आत्मा को संसार से, आत्मा को शरीर से पृथक् करके देखना भारतीय दर्शन में ही सम्भव है। इसी चिन्तन में व्यक्ति शरीर से आत्मा को और आत्मा और शरीर से परमात्मा को पृथक् देख पाता है। इस परम सत्ता को हम ब्रह्म कहते हैं, इस ज्ञान की परम्परा को हम ब्रह्मवाद के नाम से जानते हैं।

ब्रह्म का बोध एक अद्वितीय विचार है। इस चिन्तन में ब्रह्म का इस जगत् का रचयिता होना बड़ी बात नहीं है, उसका जगन्नियन्ता होना भी महत्त्वपूर्ण बात नहीं। इस सबसे भिन्न भारतीय दर्शन की अन्तर्दृष्टि ने उसे जगत् के कण-कण में व्यापक बताया है। वह मनुष्य के अन्त:करण में क्षण-प्रतिक्षण विद्यमान है। वह बाह्यजगत् के साथ अन्तर्जगत् का भी नियन्ता है, इस विचार ने इस ब्रह्मवाद को आत्मिक ज्ञान की परिणति के रूप में प्रस्तुत किया। ब्रह्म मनुष्य से कभी पृथक् नहीं होता, उसका पृथक् न होना, सदा साथ रहना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु वह हमारे प्राण का भी प्राण है, हमारा अस्तित्व उसके अस्तित्व से पोषित है। हमारी आँख उसे नहीं देख सकती, परन्तु आँख का देख सकना, उसी के कारण सम्भव है, इसी तरह वह किसी भी इन्द्रिय से नहीं जाना जा सकता, क्यों उसके कारण इन्द्रियों का अस्तित्व है। इन्द्रियों से उसका अस्तित्व नहीं। इस प्रकार ईश्वर या ब्रह्म के अस्तित्व के वैदिक-दर्शन का विचार किसी भी अन्य ईश्वर के विचार से नितान्त भिन्न है।

इस प्रकार वेद का धर्म ब्रह्म की आधारशिला पर स्थित है, फिर इसका विकास वेद या ब्रह्म के आलोक में होना अनिवार्य है। जो ब्रह्म की उपस्थिति में किया जाना चाहिए, वह ही धर्म है, क्योंकि जो व्यवहार उसे मान्य है, वही सबके लिए हितकर सम्भव है, क्योंकि वह सब में सदा विद्यमान है, इस कारण दूसरा कोई व्यवहार धर्म की श्रेणी में आ ही नहीं सकता। इस कारण हिन्दू या वैदिक धर्म सदाचार का पर्याय है, यह केवल शब्द या बाह्य व्यापार मात्र नहीं है, अपितु यह फूल में सुगन्ध या समिधा में अग्नि या अग्नि में तेज या प्रकाश की भाँति है, संसार में प्रकृति के नियम ही सदाचार के आधार हैं। अत: वैदिक धर्म प्राकृतिक या स्वाभाविक धर्म है। इसे देशकाल के व्यवधान के बिना स्वीकार किया जा सकता है। जिस प्रकार ब्रह्म सबमें है, उसका ज्ञान, उसका आचरण भी सबके लिए है। वहाँ अधिकारी-अनधिकारी का प्रश्न ही नहीं है, वह भूख के साथ भोजन की भाँति जुड़ा हुआ है, उसकी सबको आवश्यकता है, इसलिए सब उसके अधिकारी हैं। उसे प्राप्त करने की योग्यता अर्जित करना संसार में मनुष्य का मुख्य लक्ष्य है। जिसे सदाचार के पालन से प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सदाचार के बिना धर्म का और ब्रह्म के बिना धर्म का कोई अर्थ नहीं है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

संस्था - समाचार

- **लेखराम आर्य**

यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद-प्रवचन होता है।

प्रात:कालीन प्रवचन में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के बत्तीसवें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि वेदों में अध्यापक और उपदेशक के गुणों को बताया गया है। इन मन्त्रों में राजाओं के लिये भी उपदेश है। जो सत्य, मधुर, विद्यायुक्त और सबके लिये हितकारी हो ऐसी श्रेष्ठ वाणी वाले अध्यापक, उपदेशक, विद्वान् जन उत्तम राजा की स्तुति करें। लेखक, चिन्तक, आलोचक और बुद्धिमान् वक्ता राजा के उचित साहसिक कार्यों की प्रशंसा करें। राजा को बुद्धिमान् लोग वीरतापूर्ण निर्णय लेने के लिये प्रोत्साहित करें, प्रशंसा करें। राजा के निर्णय न केवल एक समाज, एक देश, अपितु पूरे विश्व को प्रभावित करने वाले होते हैं। जहाँ कहीं भी मनुष्यों पर अत्याचार हो रहा हो, चाहे वह अपने देश की सीमा में हो अथवा दूसरे देश में, वहाँ आक्रमण करके राजा अधर्मियों का नाश करे।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित रायबरेली निवासी **डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी** १७ फरवरी को ऋषि उद्यान आये। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने डॉ. धर्मवीर जी को याद किया। गायत्री मन्त्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि इस मन्त्र में सामान्य नहीं, किन्तु विशेष बुद्धि 'धी' के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गयी है। 'धी' का अर्थ ऐसी बुद्धि है जो सात्विक चिन्तनशील होती है, शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करती है, सबका कल्याण करने वाली है। यह 'धी' बुद्धि व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये एक समान हितकारी होती है।

बैंगलौर से पधारे **स्वामी दिव्यज्ञानानन्द जी** ने कहा कि जीवन को ठीक-ठीक समझना ही हम सबका उद्‌देश्य है। जीवन को समझने के लिये पहला सूत्र है- विचार। जीवन में विचार का जन्म हो, यही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। कोल्हू के बैल की तरह आँख में पट्टी बाँधकर नहीं चलना चाहिये। व्याकरण, दर्शन, वेद, वेदांग आदि पढ़कर ही हमें संतुष्ट नहीं होना चाहिये, अपितु पढ़े हुए का साक्षात्कार भी करना चाहिये।

आचार्य कर्मवीर जी ने कहा कि संसार के अन्दर दो प्रकार के पदार्थ दिखाई देते हैं- समष्टि और व्यष्टि अर्थात् व्यक्तिगत और सामाजिक। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसका एकाकी जीवन सम्भव नहीं है। एक दूसरे पर निर्भर रहना होता है। एक दूसरे पर निर्भरता का एक बड़ा आधार परस्पर की वैचारिक समानता है। संगठन या समाज में मिलजुल कर वही लोग रह सकते हैं, जिनके विचार एक होते हैं। विचार ही हमें एक दूसरे से बाँधने वाला होता है। विचारों की भिन्नता हमें एक दूसरे से अलग करने वाली होती है।

ब्र. राजन जी ने कहा कि वर्तमान में देश के युवा उचित मार्गदर्शन के अभाव में भ्रमित हैं। वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिये सबसे पहले शांतिपूर्वक सकारात्मक उपदेश होना चाहिये। शास्त्रों में जड़ मूर्तियों की पूजा का निषेध है, किन्तु माता-पिता, आचार्य, अतिथि, वृद्धजन आदि चेतन मूर्तियों की पूजा अर्थात् सम्मान, अनुकूल प्रिय आचरण का विधान है।

ब्र. सोमेश जी ने कहा कि जब किसी व्यक्ति को ऐसा लगता है कि वह सत्य जान गया, पहचान गया है तो वह दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करता है, उसे ही हम प्रचार कहते हैं, चाहे वह व्यक्ति किसी भी सम्प्रदाय या देश का हो। आर्यसमाज वेद को सत्य मानकर उसका प्रचार करता है, हिन्दु पुराण का, मुसलमान कुरान का, ईसाई बाइबिल का प्रचार करता है। आर्य समाज ने अपनी स्थापना के बाद अब तक पिछले १५० वर्षों में बहुत

उतार-चढ़ाव देखा है। आर्यसमाज की स्थापना के समय आज के बराबर भवन, प्रचार के साधन और धन नहीं था, फिर भी प्रचारकों ने दूर-दूर तक प्रचार किया। आज हमारे पास साधन बहुत हैं, लेकिन प्रचार कम हो गया है। स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार जब आर्यसमाजी समझौतावादी हो जायेगा, वेद का स्वाध्याय करना छोड़ देगा तो आर्यसमाज मर जायेगा। वेद और आर्यसमाज का प्रचार करते हुए पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल बलिदान हुए। वर्तमान में संवेदनशील युवाओं को सोचना चाहिये कि आर्यसमाज का भविष्य कैसा हो।

स्वामी सोमानन्द जी ने कहा कि गौतम बुद्ध के समय हमारे देश में वेदों के नाम पर पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी इसलिये बुद्ध ने वेद और ईश्वर को अस्वीकार किया और नास्तिक हो गया। उसने बौद्ध मत चलाया। उन्होंने तपस्या की और लोगों को अच्छा उपदेश भी दिया। महर्षि दयानन्द जी के समय में भी वेद के नाम पर मूर्तिपूजा, बलि प्रथा आदि बहुत से पाखण्ड और अन्धविश्वासों का प्रचलन था। उन्होंने व्याकरण महाभाष्य, वेद पढ़कर निश्चय किया कि वेदों में किसी प्रकार पशुओं की बलि का विधान नहीं है, अज्ञानता के कारण समाज में वेदविरूद्ध परम्परायें प्रचलित हो गई हैं। वैदिक धर्म और संस्कृति से ही संसार के लोग सुखी होंगे। अन्य कोई उपाय नहीं है।

निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार यात्रा- परोपकारिणी सभा की ओर से रविवार १२ फरवरी को अजमेर से ३० किलोमीटर दूर पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के ग्राम विरञ्च्यावास में यज्ञ और सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें ऋषि उद्यान से स्वामी मुक्तानन्द, स्वामी सोमानन्द, श्री मुमुक्षु मुनि, श्री रमेश मुनि, डॉ. किशोर काबरा, श्री वासुदेव आर्य और वाहन चालक श्री श्याम विरञ्च्यावास गांव पहुँचे। श्री सत्यनारायण आर्य के घर पर यज्ञ हुआ। वहाँ पर पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के भाई के पुत्र से मिले। गाँव में एक बैठक करके निर्णय लिया गया कि यहाँ पर आर्यसमाज की गतिविधियों को बढ़ाने के लिये प्रतिमास यज्ञ सत्संग का आयोजन किया जायेगा। उसके बाद राजगढ़ गये, जहाँ श्री वासुदेव आर्य जी के द्वारा सत्संग का आयोजन किया गया।

रविवार प्रातःकालीन यज्ञोपरान्त **श्री हेमन्त जी** ने आचार्य डॉ. धर्मवीर जी को समर्पित स्वरचित गीत सुनाया- 'जो न कर सका अब तक कोई श्री धर्मवीर जी वह कार्य कर गये, तन से मन से और वाणी से सिद्ध स्वयं को आर्य कर गये।' **ब्र. विशाल जी** ने सुनाया- 'भजन भगवान् का कर ले, जगत् दो दिन का मेला है....' **ब्र. रोशन जी** ने सुनाया- 'किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं.........' **ब्र. राजन जी** ने सुनाया 'कैसी अद्‌भुत प्रभु तेरी माया जिस तरफ देखा तू नजर आया....' और 'काहे होत उदास मना जब भगवन् तेरे पास रे.......'।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. राजीव जी** ने कहा कि गुरुकुल की प्रथा सृष्टि के आरम्भ से चली आ रही है। गुरुकुलों में वेद और वेदानुकुल शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन ही मुख्य रूप से होता है। वैदिक कृषि, शिक्षा, न्याय व्यवस्था और वैदिक शासन गुरुकुलों के बिना सम्भव नहीं है।

वर्षगांठ- २० फरवरी को श्री सत्यनारायण सोनी के सुपुत्र श्री आनन्द जी सोनी और पूर्व प्रधान डॉ. धर्मवीर जी के दामाद श्री अंकुर जी का जन्म दिन मनाया गया। आचार्य कर्मवीर जी एवं सभी आश्रमवासियों ने दोनों यजमानों के लिये मंगल कामनाये करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया।

ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रमः- इस अवसर पर विशेष यज्ञ, भजन, प्रवचन का आयोजन हुआ। **ब्र. वरुणदेव जी** ने गीत सुनाया- 'अजी हमारी कौन पूछता बात?.....', **ब्र. रोशन जी** ने सुनाया- 'गुजरात से था कौन आया दयानन्द नाम उनका ....', 'वेदों के राही दयानन्द स्वामी तेरा जग में आना गजब हो गया.......', और 'महापुरुष जनम लेंगे सूना न जहाँ होगा, गुरुदेव दयानन्द सा दुनिया में कहाँ होगा........' **ब. शिवनाथ जी** ने कहा कि हम अपने कार्यक्रमों में शिव मन्दिर में जगराता करने वाले लोगों को आमन्त्रित करें और जो प्रश्न १४ वर्ष की उम्र में मूलशंकर के मन में उठा वही प्रश्न उन लोगों के मन में उठा दें तो हमारा वैदिकधर्मी, आर्यसमाजी कहलाना सफल है। तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द पर गीत सुनाया-'देखा न कोई

दूजा ऋषिवर महान जैसा......' **ब्र. मनोज जी** ने महर्षि दयानन्द जी ने देशवासियों को एक ईश्वर, एक धर्म, एक भाषा और एक शिक्षा प्रणाली का उपदेश दिया। आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली से देश खण्ड-खण्ड हो रहा है। हम सबका कर्त्तव्य है कि महर्षि के बताये रास्ते पर चलते हुए देश को बचायें। **ब्र. रविशंकर जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द को बोध होने के अनेक कारण थे, उनका बोध बहुत ऊँचे स्तर का था। उन्होंने देखे, सुने हुए घटनाओं के कारणों पर विचार किया तो उन्हें बोध हो गया, हम भी अपने जीवन की घटनाओं पर विचार करें तो हमें भी बोध होगा। **ब्र. योगेन्द्र जी** ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी को एक बार में ही बोध हो गया। हमें बार-बार देखकर, सुनकर भी बोध नहीं होता, क्योंकि उनका वैराग्य बहुत ऊँचा था। उसके बाद महर्षि दयानन्द पर एक गीत सुनाया- 'लड़ने वाले हजारों को बेहाल कर गया, वो ऋषि था अकेला जो कमाल कर गया.......' **ब्र. सत्यव्रत जी** ने स्वरचित गीत सुनाया- 'घर छोड़के बंधन तोड़के शिव का लाल चल दिया......' **बहन अनुपमा जी** ने गीत सुनाया- 'भगवन् हमारा जीवन संसार के लिये हो ये जिन्दगी हो लेकिन उपकार के लिये हो....'

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

आगामी कार्यक्रम:-

(क) १७-१९ मार्च २०१७: आर्य समाज, पलवल।

(ख) २०-२६ मार्च २०१७: आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली।

(ग) २७-२९ मार्च २०१७: आर्य समाज कुचेरा, जि. नागौर।

दयानन्द के बारे में

-डॉ. किशोर काबरा

मन की गाँठ नहीं खुलती है गुरुडम के गलियारे में,
उसे खोलना है तो जानो दयानन्द के बारे में।

दयानन्द थे युग निर्माता औ' वैदिक पथ के राही,
ले मशाल वे निकल पड़े थे मावस के अन्धियारे में।

टंकारा में जो टंकार हुई, वह दुनिया में गूँजी,
और मलूसर आकर खुद ही सिमट गई अंगारे में।

ऋषि कहते थे-मन में छिपकर बैठा है जो परमेश्वर,
नहीं मिलेगा वह मन्दिर में, मस्जिद में, गुरुद्वारे में।

धन-दौलत औ' माल खजाने सभी व्यर्थ हो जाएँगे,
मन का तार जुड़ेगा जब उस ईश्वर के इकतारे में।

सूरज डूब रहा पश्चिम में, माला अभी अधूरी है,
मोती सभी पिरोले बन्दे वेदों के उजियारे में।

आज सभी आदर्श मर गए, शिक्षाएँ भी लुप्त हुईं,
दयानन्द के नाम रोटियाँ सिकती हैं चौबारे में।

ऊँची लहरें, गहरा सागर, नाविक सब मदहोश पड़े,
संस्कारों की जर्जर नौका डूब रही मँझधारे में।

युग की माँग यही है ऋषिवर, पुन: धरा पर आओ तुम,
कब तक तुमको ढूँढेंगे हम नभ के किसी सितारे में?

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से २८ फरवरी २०१७ तक)

१. श्री रामस्वरूप आर्य, अलवर २. श्री वासुदेव, गुजरात ३. श्री वीरेन्द्र सिंह, फरीदाबाद ४. श्री अंकुर भार्गव, बैंगलूरू ५. डॉ. पूरण सिंह डाबरा, नई दिल्ली ६. मै. डॉलर फाऊंडेशन, कोलकाता ७. श्रीमती सुयशा सेन गुप्ता, डबलिन ८. श्री राजेश आर्य, नई दिल्ली ९. श्री सवाई आर्य, बाड़मेर १०. श्रीमती सीमा बजाज, नई दिल्ली ११. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली १२. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली १३. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली १४. श्री यशपाल गुप्ता, दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से २८ फरवरी २०१७ तक)

१. श्रीमती सुशीला आर्या, विजयनगर २. श्रीमती लीला देवी, विजयनगर ३. श्रीमती फूल कँवर आर्या, विजयनगर ४. श्रीमती ज्ञानवती आर्या, विजयनगर ५. श्रीमती सुमदा आर्या, विजयनगर ६. श्रीमती कमला देवी आर्या, विजयनगर ७. श्रीमती वर्षा आर्या, विजयनगर ८. श्रीमती पूजा आर्या, विजयनगर ९. श्रीमती इन्दिरा आर्या, विजयनगर १०. श्रीमती भगवती आर्या, विजयनगर ११. श्री कृष्णगोपाल आर्य, विजयनगर १२. श्रीमती अंजना आर्या, विजयनगर १३. श्री मोतीलाल आर्य, विजयनगर १४. श्री नाथूलाल आर्य, विजयनगर १५. श्री अयोध्याप्रसाद आर्य, विजयनगर १६. श्री ओमप्रकाश आर्य, विजयनगर १७. जगदीशप्रसाद आर्य, विजयनगर १८. श्री अरुण कुमार साहू, रामसेन १९. श्रीमती तरूणा गहलोत, अजमेर २०. श्रीमती सीमा बजाज, नई दिल्ली २१. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट २२. डॉ. मोहनलाल अग्रवाल, लखनऊ।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०८८२३९४५९५६

३. १८ से २५ जून, २०१७- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

ऋषि मेला २०१६ के दानदाता

१. श्रीमती सीतादेवी वर्मा, अजमेर २. श्री दीपक गोयल, अजमेर ३. श्री रामदेव आर्य, बहादुरगढ़, ४. वैदिक संस्थान, इन्दौर, ५. मै. अध्यात्मिक शोध संस्थान, दिल्ली ६. माता उर्मिला राजोत्या, अजमेर ७. माता सरोज, अजमेर ८. श्री अभिमन्यु तँवर, अजमेर ९. श्री मोहनलाल तँवर, अजमेर १०. श्री तन्मय तँवर, अजमेर ११. श्री अमित खिंची, अजमेर १२. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली १३. श्री जागेश्वरप्रसाद निर्मल, अजमेर १४. आर्यसमाज केसरगंज, अजमेर १५. श्री प्रियव्रत, नई दिल्ली १६. आर्यसमाज, नई दिल्ली १७. सुश्री अनव्या आर्ष, नई दिल्ली १८. आर्यसमाज कालका, नई दिल्ली १९. श्रीमती तारामणि गजानन्द आर्य, कोलकाता, २०. श्री देवमुनि, अजमेर २१. श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर, अजमेर २२. श्री रमेश मुनि व श्रीमती उषा, अजमेर २३. पुरषोत्तम बूब, अजमेर २४. श्री महेशचन्द, अजमेर २५. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर २६. श्रीमती कुसुम तपेन्द्र, जयपुर, २७. श्री रामसेवक आर्य, खानपुर, २८. श्री निरन्जन साहू, अजमेर २९. श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य, अजमेर ३०. श्री सुशील कुमार, अजमेर ३१. श्री जितेन्द्र आर्य, अजमेर ३२. श्री पतंजलि शर्मा, अजमेर ३३. श्रीमती पुष्पा गुप्ता, अजमेर ३४. श्री राजेन्द्र शर्मा, अजमेर ३५. श्री सुरेन्द्रकुमार रामचन्दानी, अजमेर ३६. श्री वासुदेव आर्य व श्रीमती कुमुदिनी आर्या, अजमेर ३७. श्री शान्तिदेव आर्य, अजमेर ३८. श्री नाथूलाल अजमेर ३९. श्री रामदेव आर्य, अजमेर ४०. श्री जातवेद आर्य, अजमेर ४१. श्री दिनेश अग्रवाल, अजमेर ४२. श्री रामजीलाल अरोड़ा, अजमेर ४३. श्री माणकचन्द रांका, अजमेर ४४. श्री कमल शर्मा, अजमेर ४५. श्री महेन्द्रप्रसाद शर्मा, अजमेर ४६. श्री रतनचन्द्र आर्य, नई दिल्ली ४७. श्री सन्तोष कुमार गुप्त, बुलंदशहर ४८. श्री चन्द्रपाल, पलवल ४९. सुश्री पुष्पा गर्ग, जयपुर ५०. श्री जगदीश कुमार कुंतल, भरतपुर ५१. श्री विपिन आर्य, सहारनपुर ५२. श्री रामधन रैनवाल, कोलिया ५३. तनेजा फाउन्डेशन, नई दिल्ली ५४. आर्य प्रकाशन, दिल्ली ५५. श्री दिगम्बर राव पटेल, निजामाबाद ५६. श्री अशोक कुमार, पठानकोट ५७. श्री विनोद गुप्ता, उड़ीसा ५८. श्री नरेन्द्र सिंह, पाली ५९. श्री करतार सिंह, जोधपुर ६०. श्री जगराम सिंह आर्य, नारनौल ६१. श्री टी.आर.शर्मा, कांगड़ा ६२. श्री भगवानसिंह, पंचकुला ६३. श्री धर्मवीर रेहानी, अजमेर ६४. श्रीमती प्रतिभा वेद कुमार वेदालंकार, उस्मानाबाद ६५. श्री भक्तिराम, हैदराबाद ६६. श्री सुरत्री विवेक, लखनऊ ६७. श्री शिवशंकरलाल वैश्य, लखनऊ ६८. श्री दुर्गाप्रसाद, लखनऊ ६९. श्री रामपाल छीपा, किशनगढ़ ७०. श्री रतनलाल तापड़िया, अजमेर ७१. श्रीमती अमृता मनोज काबरा, कुवैत ७२. श्रीमती सूर्याकुमारी, अजमेर ७३. श्री विनय कुमार मल्होत्रा, अजमेर ७४. ब्लॉसम सै. स्कूल, अजमेर ७५. श्रीमती सुमन सिंह, अजमेर ७६. सर्वोत्तम शर्मा, अजमेर ७७. वर्मा एग्रीकल्चरल एण्ड इन्डस्ट्री, अजमेर ७८. बांठिया एण्ड कं., अजमेर ७९. जिन्दल रेडीमेड, अजमेर ८०. हीँगा ब्रदर्स, अजमेर ८१. मयंक प्लास्टिक, अजमेर ८२. श्री राजेन्द्र सिंह व श्रीमती स्नेहा राठौड़, अजमेर ८३. श्रीकृष्ण गोपाल हेड़ा, अजमेर ८४. श्री एस.आर.पाराशर, अजमेर ८५. श्री अमित पंचोली, अजमेर ८६. मै. गरिमा एन्टरप्राइजेज, अजमेर ८७. श्री सोहनलाल कटारिया, अजमेर ८८. श्री आशीष सिंह कटारिया, अजमेर ८९. श्रीमती सुधा वर्मा, अजमेर ९०. श्री गिरधरगोपाल, अजमेर ९१. श्रीमती आराधना आर्या, अजमेर ९२. डॉ. सुभाष माहेश्वरी, अजमेर ९३. श्री एस.एस. सिद्ध, अजमेर ९४. श्री मयंक कुमार, अजमेर ९५. श्री चन्द्रप्रकाश भटनागर, अजमेर ९६. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ९७. यज्ञदत्त शर्मा, अजमेर ९८. श्री पूर्णशंकर दशोरा, अजमेर ९९. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर १००. श्रीमती सुशीला तँवर, अजमेर १०१. श्री नकुल भारद्वाज, अजमेर १०२. मै. आर.आर.ज्वैलर्स, अजमेर १०३. श्रीमती कलावती, अजमेर १०४. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १०५. श्री बी.के.सिंह , अजमेर १०६. श्री गोवर्धनप्रसाद खण्डेलवाल, अजमेर १०७. श्रीमती सुशीला देवी शर्मा, अजमेर १०८. श्रीमती सीता देवी, अजमेर १०९. श्री किशनसिंह मेहर, अजमेर ११०. श्रीमती सन्तोष शास्त्री, अजमेर १११. श्री रामस्वरूप आचार्य, अजमेर ११२. श्री पंकज कुमार गर्ग, कोलकाता ११३.

आर्यसमाज, रामपुर ११४. मै. कन्हैयालाल, आण्णद ११५. मै. विवेक एजेन्सीज, मुबंई ११६. श्री मनोज शारदा, अजमेर ११७. श्रीमती रजनी शारदा, अजमेर ११८. श्री सौरभ शारदा, अजमेर ११९. श्री भगत वच्छानी, अजमेर १२०. श्रीमती स्नेहा वच्छानी, अजमेर १२१. डॉ. अचला आर्य, अजमेर १२२. श्रीमती माया भार्गव, अजमेर १२३. मदनलाल सुन्दरदेवी चेरिटेबल ट्रस्ट, अजमेर १२४. श्री राजेन्द्र कुमार, महेन्द्रगढ़ १२५. श्री रामप्रकाश अग्रवाल, भीलवाड़ा १२६. मधु एजेन्सीज, अजमेर १२७. तोषनीवाल चैरिटी ट्रस्ट, अजमेर १२८. श्री कालीचरण मोहन्ती, बलांगिर १२९. श्री बेचनप्रसाद जैसवाल, गोरखपुर १३०. श्री कमलेश धरमानी, पुणे १३१. श्री रामगोपाल खींची, छीपाबड़ौद १३२. श्री बी.एल. जोशी, इन्दौर १३३. श्री मधुसूदन यादव, अहमदाबाद १३४. श्रीतमेश्वरलाल साहू, नागपुर १३५. श्री सतपाल, सारंगपुर १३६. श्री रामअवतार शर्मा, हमीरपुर १३७. श्री ब्रजमोहन लढ्ढा, हरिद्वार १३८. श्री इन्द्रभूषण अबोल, जयपुर १३९. मन्त्री, आर्यसमाज, सिकन्दराबाद १४०. श्री बलवान सिंह वैश्य, झज्जर १४१. श्रीमती सुषमा कला चन्द्रा, गाजियाबाद १४२. मन्त्री, आर्यसमाज, जालंधर १४३. श्री देवपाल आर्य, मुजफ्फरनगर १४४. श्री अनिल गुप्ता, अजमेर १४५. श्रीमती विशाखा त्यागी, बुलंदशहर १४६. श्री कृष्णकुमार झा, अनूपशहर १४७. श्री बालकिशन आर्य, झज्जर १४८. श्री कुंजबिहारी पालड़िया, अजमेर १४९. श्री वी.के.गोस्वामी, दिल्ली १५०. श्री हरिबन्धु महापात्रा, उड़ीसा १५१. श्रीमती विमला, अम्बाला कैन्ट १५२. श्रीमती नीरु आर्या, अम्बालाकेन्ट १५३. प्रफुल्ल पांडा, उड़ीसा १५४. श्री सुबोध जैन, अजमेर १५५. श्री आर.के.मेहता, अजमेर १५६. सेन्चुरी स्टोन प्रा.लि., किशनगढ़ १५७. श्री नरेन्द्र कुमार, प्रफुल्ल कुमार गंगवाल, किशनगढ़ १५८. वेगानी मार्बल्स उद्योग, किशनगढ़ १५९. डॉ. गौरवदेव शारदा, अजमेर १६०. श्री भूषणलाल हरिद्वार १६१. श्रीमती चन्द्रप्रभा खन्ना, जम्मू १६२. श्री आशाराम आर्य ओैरैया १६३. श्री सोमपाल सिंह आर्य, मुजफ्फरनगर। १६४. श्री शिव सिंह आर्य, पलवल १६५. श्री ओमप्रकाश बाहेती, अजमेर १६६. श्री राकेश जैन, अजमेर १६७. श्री मनीष पन्डिया, अजमेर १६८. श्री आर.के. शर्मा, अजमेर १६९. श्री ओमप्रकाश लढ्ढा, अजमेर १७०. श्रीमती कमला देवी, अजमेर १७१. श्री डी.डी. तनेजा, अजमेर १७२. श्री राजेश्वर सहानी, चैनपुर १७३. श्री मुन्नालाल वामनिया, अहमदाबाद १७४. आर्यसमाज, कुचेरा १७५. श्री विजय आर्य, मोहाली १७६. श्री जनार्दन आर्य, गाजीपुर १७७. श्री ध्रुवनाथ, गाजीपुर १७८. श्री विजय आर्य, अम्बाला छावनी १७९. श्री हेम सैनी, अम्बाला छावनी १८०. श्री वी.पी. मदान, अम्बाला छावनी १८१. श्रीमती सन्तोष सहगल, अम्बाला छावनी १८२. श्रीमती सुशान्ता अरोड़ा, अम्बाला छावनी १८३. श्रीमती सुचिन्ता शर्मा, अम्बाला छावनी १८४. श्रीमती शशिपुरी, अम्बाला छावनी १८५. रासराज आयुर्वेदिक फार्मेसी, उदयपुर १८६. आर्यसमाज मन्दिर, अम्बाला छावनी १८७. स्त्री आर्य समाज, अम्बाला छावनी १८८. श्री राजेश आर्य, रेवाड़ी १८९. श्री ज्ञानचन्द शास्त्री, भिवानी १९०. आर्यसमाज, चैनपुर १९१. श्री अनीश शर्मा, अजमेर १९२. श्री जयपाल सिंह आर्य, सहारनपुर १९३. श्री लोहार सिंह आर्य, सहारनपुर १९४. श्रीमती कमला देवी आर्या, सहारनपुर १९५. श्री सुभाष स्वामी, बीकानेर १९६. मास्टर कँवर सिंह, रेवाड़ी १९७. श्री हंसमुनि योगार्थी वैदिक तपस्थली, कादीपुरी, नारनौल १९८. श्री कन्हैयालाल, गुरुग्राम १९९. श्री ओमप्रकाश पहुजा, गुरुग्राम २००. मै. डाँग मेडिकल स्टोर, गुरुग्राम २०१. श्री हरीश कुमार, गुरुग्राम २०२. मै. गुप्ता मेडिकल एजेन्सी, गुरुग्राम २०३. श्री सुभाष आहुजा, गुरुग्राम २०४. श्री श्रवण कुमार मखीजा, गुरुग्राम २०४. श्री सुभाष कालड़ा, गुरुग्राम २०५. श्री टी.आर. गोयल, चंडीगढ़

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

हृदय की तड़पन

– **सोमेश पाठक**

वक्त बेवक्त कुछ वक्त याद आते हैं.......

पर यादों के आने से क्या वक्त आ जाते हैं?????

तेरा भी अजब तमाशा है, ऐ वक्त! तेरे ही अतीत से प्रेम है हमें और तेरे ही भविष्य को हम दोषी ठहरा रहे हैं। तेरे कितने रूप हैं रे?????

अचरज है........वक्त ही वक्त का वक्त (काल) बना बैठा है। और फिर भी हम वक्त से आस लगाये हैं कि शायद.....?

यूँ तो लाखों लोग इस संसार में जीवित होने का बहाना बनाते हैं, पर असलियत में वही व्यक्ति जीवित है, जिसके जीवन में रचनात्मकता होती है। रचनात्मकता की रचना श्रेष्ठ विचारों से होती है और श्रेष्ठ विचार श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता के द्योतक होते हैं। मनुष्य विचारों से जीवित है ना कि सिर्फ शरीर से....

डॉ. धर्मवीर जी ऐसे ही एक विचारशील व्यक्तित्व थे, जिनके विचार सदियों तक लोगों का मार्गदर्शन करेंगे और जीवित रहेंगे। और जब विचार जीवित हैं तो व्यक्ति के जीवित होने में क्या संदेह?

डॉ. धर्मवीर जी उन वक्ताओं में से थे, जिन्हें हर तरह के श्रोता पसंद करते हैं। चाहे वे श्रोता हास्य में रुचि रखने वाले हों, चाहे व्यंग्य में। चाहे खण्डन में रुचि रखने वाले हों, चाहे मण्डन में। चाहे दर्शन में रुचि रखने वाले हों, चाहे वेद में। चाहे कौटिल्य में रुचि रखने वाले हों, चाहे दयानन्द में। चाहे कालिदास में रुचि रखने वाले हों, चाहे बाणभट्ट में। चाहे अर्थशास्त्र में रुचि रखने वाले हों, चाहे नीतिशास्त्र में। चाहे मनु में रुचि रखने वाले हों, चाहे याज्ञवल्क्य में। चाहे गद्य में रुचि रखने वाले हों, चाहे पद्य में। चाहे श्लोकों में रुचि रखने वाले हों, चाहे मन्त्रों में। हर तरह का श्रोता उनसे प्रभावित हुआ करता था। यह वक्तृत्व कला की पराकाष्ठा है और विद्वत्ता की भी।

यूँ तो अनेकों लेखक हुये, जिन्होंने बड़े विद्वत्तापूर्ण ढंग से बड़े-बड़े ग्रन्थों की रचना की, पर आर्यसमाज के इतिहास में, इस भारत के इतिहास में और संभवत: सारी दुनिया के इतिहास में डॉ. धर्मवीर जी वो पहले व्यक्ति होंगे, जिनके सिर्फ सम्पादकीय लेखों से (परोपकारी पत्रिका) कई विस्तृत, खोजपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण, विचारपूर्ण, प्रेरणादायक एवं अभूतपूर्व ग्रन्थों का निर्माण हो सकेगा।

जिस व्यक्ति ने आर्यसमाज के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, जिसने परोपकारिणी सभा की आजीवन नि:स्वार्थ सेवा की, जिसने एक बीहड़ स्थान को ऋष्युद्यान जैसा दर्शनीय स्थल बना दिया, जिसकी वाणी का प्रभाव देश-विदेशों में देखा जाता है, जिसकी लेखनी ने अनेकों के जीवन बदल डाले, जिसकी निर्भीकता का लोहा सारा आर्यजगत् मानता है, जिसकी तर्कशक्ति के सामने बड़े-बड़े विद्वान् धराशायी होते देखे गये, भला ऐसे व्यक्ति को इस सदी का महापुरुष मानने में और क्या प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है?

पं. लेखराम जैसी तड़प, पं. गुरुदत्त जैसा समर्पण, पं. गंगाप्रसाद जैसी दार्शनिकता, पं. चमूपति जैसी ऊहा, स्वामी सत्यप्रकाश जी जैसी वैज्ञानिकता, स्वामी दर्शनानन्द जी जैसा लेखन, स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा त्याग, पं. रामचन्द्र देहलवी जैसी प्रत्युत्तरमति.......अगर किसी एक व्यक्ति में ये सब बातें देखनी हों तो निस्संदेह डॉ. धर्मवीर जी का नाम प्रथम पंक्ति में होगा।

अगर बोलना मात्र ही वक्तृत्व का गुण होता तो शायद संसार का प्रत्येक प्राणी वक्ता होता। इसलिए वक्ता वो नहीं जो सिर्फ बोल लेता है, वक्ता तो वो है, जिसके बोलने के बाद उसके बोल संसार बोलता है। ऐसे ही एक व्यक्तित्व कभी हमारे मध्य में अवतरित हुए, जिन्हें हम आज आचार्य डॉ. धर्मवीर जी के नाम से जानते हैं।

बात गर अतीत की हो तो आँसू जगह ढूंढ ही लेते हैं,

बहाना हँसने का हो या हँसने की कोशिश का। अतीत का खेल भी अजीब है........ गर 'आज' (वर्तमान) न हो तो भी नहीं, गर 'आज' है तो भी नहीं। रे अतीत! 'आज' ही तो तेरा निर्माता है, फिर भी 'आज' से ही वैर....... क्यूँ?????????

'कल' 'आज' में तेरा जिक्र था 'आज' 'कल' में तेरा जिक्र है। पर फिर भी तू बेफिक्र........

खैर! तुझे क्या? तू तो खुश है अपनी खुशी में।

'आज' रोता है तो रोये................।

संकल्पाग्नि

– देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'

बनकर नर-वर संकल्प आग।
तू जाग-जाग हे आग जाग।।
मत बन्द-मन्द हो हृदय आग,
तू नर-वर की अभ्युदय आग।
हम तपें थकें या सो जाये,
तू रक्षित रखना ध्येय आग।।
हो कंटक पथ या सुमन मार्ग।
तू जाग-जाग हे अग्नि जाग।।१।।
जाग्रत स्वप्न सुनिद्रा हो,
राही की कोई मुद्रा हो।
चिन्तना रूप हे अग्नि धूप,
धावक की शक्ति समग्रा हो।
हो कणिक नाग या मणिक राग।
तू जाग जाग हे अग्नि जाग।।२।।
जैसे तू हमें सुलाये रे,
आनन्द ऊर्जा लाये रे।
सद्धर्म ध्येय के लिए अग्नि,
वैसे तू हमें उठाये रे।।
दे त्याग.... याग,
तू जाग जाग हे अग्नि जाग।।३।।
ओं अग्ने त्वं॒सुजागृहि वयं॒सुमन्दिषीमहि।
रक्षाणो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि।।
– (यजु. ४.१४)

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम- शुद्धि आन्दोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी

लेखक- श्री सन्तोष आर्य

प्रकाशक- आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

मूल्य- ८०/- रु. मात्र

पृष्ठ- १३५

प्रस्तुत पुस्तक शुद्धि आन्दोलन से सम्बन्धित है। शुद्धि का अर्थ है कि जो पहले हिन्दू थे पर अब नहीं हैं, उन्हें फिर से हिन्दू बनाना। अगर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो यह पुस्तक लेखक का सफल प्रयास है। लेखक ने इतिहास के उन पन्नों को प्रस्तुत किया है, जिन पर सामान्यत: दृष्टि नहीं पड़ती है। शुद्धि आन्दोलन का बीज स्वामी दयानन्द ने बोया था। स्वामी दयानन्द के बाद आर्य समाज के अन्य नेताओं ने भी इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द को इस आन्दोलन का महानायक कहा जा सकता है। इन दोनों का बलिदान भी इस बात का साक्षी है। इतिहास यद्यपि अतीत है मगर जब हम उस पर विचार करते हैं तो वह हमारा अग्रणी बनकर हमारा मार्गदशर्न करता है। इतिहास की रक्तरंजित पंक्तियाँ हमें यह सोचने पर विवश कर देती हैं कि हमारी वर्तमान स्थिति की नींव हमारे पूर्वजों ने किन कठिनाइयों से रखी थी।

आज के इस दौर में जहाँ कि ईसाइयत और इस्लाम निरन्तर धर्मान्तरण अर्थात् अधर्मान्तरण का जिम्मा बखूबी निभा रहे हैं। वहाँ इस देश के युवाओं को इस तरह की पुस्तकों की महती आवश्यकता है। ताकि युवा अपने इतिहास से प्रेरित होकर महर्षि दयानन्द द्वारा छेड़े गये इस आन्दोलन का हिस्सा बन सकें।

लेखक ने उन नामों से भी हमारा परिचय करवाया है जो कि पहले मुसलमान थे और फिर आर्य (हिन्दू) बन गये। सिर्फ आर्य ही नहीं बन गये बल्कि आर्यजगत् के बड़े विद्वानों में उनका नाम लिया जाता है।

लेखक का उद्देश्य और परिश्रम दोनों ही सराहनीय हैं अत: वे साधुवाद के पात्र हैं।

– **सोमेश पाठक**

भारतीय संस्कृति और नववर्ष
(एक अनिवार्यता)

- प्रभाकर आर्य

धार्मिक समाज के लोगों में प्राय: एक शब्द प्रचलन में रहता है- भारतीय संस्कृति। इसे बचाने, इसका पालन करने, मानने पर भी काफी बल दिया जाता है। जो लोग इसके पक्ष में होते हैं, उनके अनुसार प्राचीन परम्पराओं का नाम भारतीय संस्कृति है। आधुनिक कहे जाने वाले लोगों का सीधा सा सवाल होता है- क्या आप संस्कृति के नाम पर दरिद्रता, साधनहीनता और पिछड़ेपन में समाज को ले जाना चाहते हैं? उनके मस्तिष्क में एक बात घर कर गई है कि भारतीय संस्कृति मतलब पिछड़ापन। भारतीयता का पक्ष लेने वाले लोग पूजा, त्यौहार, सादे वस्त्र, संस्कृत, वेद-शास्त्रों को अनिवार्य मानते हैं। आधुनिक लोगों के चॉकलेट डे जैसे कुछ नये त्यौहार भी हैं। वीक एण्ड नाम से एक और त्यौहार ने जन्म लिया है। हालांकि होली, दीपावली को भी जैसे-तैसे मनाने में उन्हें कोई परहेज नहीं है।

एक छोटी सी बात- जो हम सभी को स्वीकार्य है और इस समस्या का स्थायी समाधान भी है, वो है- अनिवार्यता। मतलब, हमारे शरीर और समाज दोनों के लिये जो अनिवार्य है, वो हमें करना ही होगा।

मनुष्य सहित प्रत्येक जीव का शरीर प्रकृति से बना है। ये पूरा संसार भी प्रकृति से ही बना है। इसी को शास्त्र की भाषा में कहें तो 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' जो हमारे शरीर में है, वही इस संसार में है। दोनों ही प्रकृति के तत्वों से बनते हैं। इससे हमें दो बातें समझ में आती हैं, **पहली**- शरीर में यदि कोई विकार है तो निश्चित सी बात है कि शरीर में प्रकृति के तत्त्व असंतुलित हैं और ये भी निश्चित है कि उन्हें सन्तुलित भी उन्हीं तत्त्वों से किया जा सकता है। **दूसरी**- इस ब्रह्माण्ड के तत्त्वों (अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी) से ही हमारा शरीर वृद्धि करता है अर्थात् हमारे वातावरण का परिवर्तन हमारे शरीर को प्रभावित करेगा ही। कुल मिलाकर हमारा शरीर और ये संसार परस्पर गहरा सम्बन्ध रखते हैं, क्योंकि दोनों का मूल एक ही है, इसीलिये दोनों एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं।

पर हमारे शरीर और इस भौतिक जगत् में एक भिन्नता भी है, वो यह कि भौतिक जगत् तो पहले से ही जैसा है, वैसा ही रहेगा, यदि अनुकूलता लाने के लिये परिवर्तन करना ही है तो हम स्वयं की जीवन-शैली में परिवर्तन कर सकते हैं। ऋतुओं के बदलने पर अपना भोजन, वस्त्र, जीवनचर्या, ये सब हमें ही बदलने हैं और प्रसन्नतापूर्वक बदलने हैं और यदि इन अवसरों पर ईश्वर, धर्म, सामूहिकता जैसी चीजें भी जुड़ जायें तो यह परिवर्तन, यह प्रसन्नता व्यवस्थित व अधिक सुखकारी हो जाती है। बस इन्हीं का नाम पर्व, उत्सव, त्यौहार और भारतीय संस्कृति है। नववर्ष भी इसी व्यवस्था को बनाये रखने का एक अनिवार्य अंग है।

समाज में व्यवहार करने के लिये हमें समय की व्यवस्था तो बनानी ही है, चाहे प्रकृति के अनुकूल रहते हुए बनाएं या अपनी मनमरजी से। प्रकृति के प्रतिकूल जाने का मतलब है, उससे दुश्मनी मोल लेना। प्रकृति हमारी तरह बुद्धिमति तो है नहीं कि अपने नियम ही छोड़ दे, हमारे प्रतिकूल व्यवहार पर वो तो अपनी निश्चित प्रतिक्रिया देगी ही, चाहे वो हमारे लिये सुखद हो या दु:खद। सूरज तो दिन की शुरुआत सुबह सवेरे ही करता है, ये हमारी स्वतन्त्रता है कि हम आधी रात को दिन की शुरुआत मानने लगें। दुनिया का प्राय: हर प्राणी प्रकृति के साथ चलता है, उसी के साथ सोता है, उसी के साथ जागता है। जागते तो हम भी सुबह ही हैं, पर दिन का प्रारम्भ आधी रात से ही मानेंगे। चन्द्रमा बढ़ता है तो शुक्ल पक्ष की तिथि बढ़ती है, घटता है तो कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़ती है। मूढ़ अचेतन सागर की लहरें भी चन्द्रमा के आधार पर ही घटती और बढ़ती हैं, पर हम तो ठहरे बुद्धिमान्, अपनी तारीख अलग ही चलायेंगे!

महीनों की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार **'साऽस्मिन् पौर्णमासीति'** अर्थात् मास की पूर्णिमा को जो नक्षत्र होगा, उसी नक्षत्र के नाम से महीने का नाम रखा जाता है। पूर्णिमान्त मास कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को प्रारम्भ होता है और अमावस्यान्त शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को, पर गणना चन्द्रमा के आधार पर ही होती है और मास का नाम नक्षत्र के आधार पर। सब कुछ प्रकृति के साथ चलता है। इसी प्रकार पृथिवी सूर्य के चक्कर लगाते हुये २४ घण्टों में अपना चक्र पूरा करती है, इस गति को करते हुए पृथिवी पर सूर्य की स्थिति छ: महीने उत्तरी गोलार्ध पर रहती है और छ: महीने दक्षिणी गोलार्ध पर, जिसके कारण उत्तरायण और दक्षिणायन विभाग किया जाता है। सूर्य जिस समय उत्तरायण में विषुवत् वृत्तस्थ अर्थात् भूमध्य रेखा (इक्वेटर) पर होता है, उस समय से **नववर्ष** प्रारम्भ होता है। सूर्य बसन्त ऋतु में उत्तरी गोलार्ध की विषुवत् रेखा से चलकर दक्षिणी गोलार्ध में जाकर जब पुन: उत्तरी गोलार्ध में विषुवत् रेखा पर आता है तो यह समय एक वर्ष होता है। ये पूरी गणना बिना शोध, बिना गणित, बिना गणित ज्योतिष के तो सम्भव नहीं हो सकती। फिर भी भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना अपने आप में ही मानसिक हीनता व वैचारिक जड़ता की द्योतक है।

ईसाई नववर्ष ईसामसीह से सम्बन्धित है। इस्लामिक नववर्ष हजरत मुहम्मद के मक्का-मदीना से प्रवास पर आधारित है। दोनों का ही आधार व्यक्ति विशेष है, पर भारतीय नववर्ष का आधार है-प्राकृतिक व्यवस्था। यह प्रश्न हो सकता है कि भारतीय सम्वत् भी राजा विक्रमादित्य के राज्याभिषेक से प्रारम्भ हुआ। वस्तुत: विक्रमादित्य का राज्याभिषेक नवसम्वत्सर (नववर्ष) पर हुआ, ना कि नवसम्वत्सर विक्रमादित्य के राज्याभिषेक से प्रारम्भ हुआ, परन्तु उससे एक नया सम्वत् चल पड़ा-विक्रम सम्वत्, यह राज्याभिषेक नववर्ष पर हुई एक घटना है। यह संस्कृति ही इतनी वैज्ञानिक है जो कि किसी व्यक्ति विशेष के नाम के पूर्वाग्रह को छोड़कर ईश्वरीय व्यवस्था के अनुरूप, अनुकूल अपनी व्यवस्थाएँ बनाती है।

होली, दीपावली, दशहरा आदि पर्व भी इसी वैज्ञानिकता व मानव कल्याण की भावना का परिणाम हैं। किसी भी संस्कृति, सभ्यता में किन चीजों को महत्व दिया जाता है, ये हम उस सभ्यता के लोगों द्वारा मनाये जाने वाले उत्सवों, आयोजनों से जान सकते हैं। पश्चिमी देशों की शैली विलासिता व भोगवादी है, इसलिये वहाँ एक-दूसरे पर टमाटर फेंककर भी मनोरंजन किया जाता है। ऋषियों का विचार रहा है कि जीवमात्र के पालन-पोषण का आधार अन्न है और अन्न कृषि से उत्पन्न होता है, अत: लहलहाती खेती को देखकर अपनी प्रसन्नता को सामूहिक रूप से व्यक्त करने के लिये होली पर्व का आयोजन और साथ ही प्रकृति के सन्तुलन को बनाये रखने के लिये नित्य व त्यौहारों पर (नैमैत्तिक) यज्ञ का आयोजन, इस प्रसन्नता में भी अध्यात्म को बनाये रखने के लिये ईश्वरोपासना, ये सब ऋषियों के सात्विक उद्देश्यों को व्यक्त करते हैं। इन पर्वों को मनाया तो आज भी जाता है, पर आधुनिकता और दिमागी खुराफात का मिश्रण किये बिना हम बुद्धिमान् कैसे कहला सकते थे, सो हमने भी आविष्कार कर लिये। जिस दीपावली को कभी धान की खेती से प्रसन्न हो, उसकी वृद्धि के लिये स्वच्छतापूर्वक मनाया जाता था, अब उसी पर्व पर आसमान में इतना धुआँ उठता दिखाई देता है, मानो सब जगह एक साथ आग लग गई हो। पटाखों की मार से तड़पते निरीह जीवन हमारी बौद्धिकता व आधुनिकता पर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। जिस होली को आर्यजन टेसू के फूलों का रंग बनाकर आनन्द का माध्यम बनाते थे, वह आज हमारी आधुनिकता की भेंट चढ़कर सामाजिक झगड़ों, मद्यपान व अनाचार के लिये अनुकूल अवसर बन गई।

त्यौहार वही हैं, स्थान वही है, बस बदली है तो हमारी मानसिकता, हमारे उद्देश्य, पर इन्हीं के बदलने से शायद सब कुछ बदल गया। यदि विचार केवल बदलते तो शायद हानि कम थी, क्योंकि आज नहीं तो कल विचारों को पुन: बदला जा सकता है, पर शायद विचार करने की क्षमता ही खो दी है हमने, तभी तो हम भारत की जिस सात्विक शैली पर गर्व करते हैं, उसे इतने आसुरी तरीके से व्यक्त व प्रस्तुत करते हैं। हमारे विचार क्या हैं ये स्वयं हमें भी नहीं पता हैं। जहाँ से जो मिला, हमने लिया और

लेते जा रहे हैं।

ऋषियों ने हमारे जीवन को स्वस्थ व समाज को सन्तुलित रखने के लिये जो व्यवस्थाएँ दीं, उनसे अच्छी व्यवस्था में कोई चलना चाहे, ये अच्छी बात है, पर केवल यह कहकर कि भारतीय संस्कृति पुरानी है, इसे नकारा नहीं जा सकता। कोई इसे भारतीय संस्कृति न कहकर अनिवार्य जीवन-शैली कह ले, कोई फर्क नहीं पड़ता। इसे अस्वीकार ही कर दे तो भी संस्कृति का क्या बिगड़ेगा। व्यवस्थाएँ हमारे लिये हैं, हमारे समाज के लिये हैं, यदि हम उनके अनुसार चलेंगे तो स्वस्थ रहेंगे, विपरीत चलेंगे तो परिणाम निश्चित भुगतने होंगे। ऋषियों का उद्देश्य हमें सुखी रखना है, इससे उन्हें कोई लाभ नहीं मिलने वाला।

हम यज्ञ करके जलवायु को स्वच्छ रखेंगे तो हमें ही लाभ होगा। होली आदि पर्वों के द्वारा कृषि को महत्व देंगे तो हमारा ही भविष्य सुरक्षित होगा। प्रकृति पर आधारित सम्वत्सर-व्यवस्था अपनाकर ऋतु के अनुसार स्वयं को चलायेंगे तो हम ही स्वस्थ रहेंगे। व्यवस्थाएँ हमारे लिये हैं, हम व्यवस्थाओं के लिये नहीं।

महर्षि मनु इसीलिये स्पष्ट घोषणा करते हैं-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तत्मात् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।

अर्थात् मरा हुआ धर्म (नियम-व्यवस्थाएँ) हमें मार देता है और रक्षित किया गया धर्म हमारी रक्षा करता है। इसलिये धर्म का उल्लंघन नहीं करना चाहिये, ऐसा ना हो कि वह धर्म हमें ही मार दे।

जिन परम्पराओं को हम पुराना समझकर छोड़ चुके हैं, उसके परिणाम हमारे सामने हैं। आज हमारे पास धन (करेन्सी) तो है, पर वो करेन्सी जिस अन्न को प्राप्त करने के लिये इकट्ठी की गई थी, वह अन्न शुद्ध ही है- ये विश्वास किसी को नहीं है। हमारे पास खाने के लिये भी बहुत कुछ है, पर वह हमारे शरीर के योग्य नहीं या यूँ कहें कि धर्म का उल्लंघन करते-करते शरीर ही भोग के योग्य नहीं बचा है। हमें अपने उद्देश्य, अपनी प्राथमिकतायें निश्चित करनी होगीं। यदि नोटों (करेन्सी) को बिस्तर पर बिछाकर सोना ही हमारा उद्देश्य है, तब तो भारतीय संस्कृति की कोई आवश्यकता ही नहीं, परन्तु यदि स्वच्छ अन्न, स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु, स्वच्छ समाज, व्यवस्थित समाज, स्वस्थ शरीर और इन सबके होने पर पर्याप्त साधन- ये हमारा उद्देश्य है, तो दुनिया का कोई भी मनुष्य हो, उसे भारतीय संस्कृति अपनानी ही होगी। वस्तुतः किसी भी नियम चाहे वह अब अनुपयोगी ही हो, उससे बन्धे ही रहना ऋषियों की संस्कृति नहीं है। वह तो मानव को अधिकाधिक सुखी, सम्पन्न व समृद्ध बनाना चाहती है, इस शर्त के साथ कि वह सुख वास्तविक सुख हो- एक शराबी की तरह केवल क्षणिक उन्माद मात्र ना हो। ऋषियों की संस्कृति का अर्थ आँख पर पट्टी बांधकर पीछे-पीछे चलना नहीं, वरन् स्वयं विवेकी बनकर नित्य नये मार्ग तलाशना है। ईश्वर ने हमारे जीने के लिये प्रकृति में जो व्यवस्था दी है, उसे बनाये रखते हुए हम जितना आवश्यक निर्माण कर सकते हैं, करें। परन्तु यदि कृषक (किसान) को पिछड़ा कहकर सम्पूर्ण भूमि पर भवन ही बनाने का नाम विकास है, तो ये विकास हमें भूख से तड़पकर मरने को मजबूर कर देगा।

ये भ्रान्ति बिलकुल हटा देनी चाहिये कि हम संस्कृति की रक्षा कर उस पर कोई उपकार करेंगे। और वैसे भी हमारे पर्यावरण, हमारे मौसम, हमारे खान-पान, हमारी दिनचर्या के सारे निर्णय तो गणित ज्योतिष् के आधार पर ही होते हैं तो फिर कालगणना और नववर्ष भी इसी वैज्ञानिक आधार पर ही क्यों न मनायें जायें। साथ ही अपने त्यौहारों की अनिवार्यता को समझते हुए हम उन्हें शुद्ध रूप में ही मनाएँ।

भारतीय संस्कृति अनिवार्यता की संस्कृति है, मानव जाति के हित के लिये है, यहाँ तक कि समस्त प्राणी-समाज व इस प्रकृति के लिये भी अनिवार्य है। यदि स्वयं को प्रकृति के अनुकूल रखना, पर्यावरण को सन्तुलित रखना, समाज को उच्छृंखलता से बचाए रखना पिछड़ापन है तथा अव्यवस्था, असन्तुलन ही आधुनिकता के परिचायक हैं तो ये दोनों ही परिभाषाएँ स्वीकार्य हैं, पर ये तो निश्चित है कि हम प्रकृति के नियमों को नहीं बदल सकते, भले ही उसे भारतीय संस्कृति न कहकर कुछ भी नाम दे दीजिये। अनिवार्य आखिर अनिवार्य ही होता है।

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश सूचना- आधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने के उद्देश्य से दयानन्द पेराडाइज स्कूल की स्थापना राजस्थान में आबूरोड शहर से ५ किमी दूर २५ बीघा भूमि के विस्तृत भू-भाग में की गई है, जिसमें सत्र २०१७-१८ में प्रवेश हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ की जा चुकी है। इस विद्यालय से उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जायेगी। २०१७-१८ के सत्र में कक्षा ६ तक प्रवेश दिया जायेगा। कक्षा ३ से विद्यार्थियों के आवास की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाईट एवं सम्पर्क सूत्र से प्राप्त करें। पंजीयन हेतु रजिस्ट्रेशन फार्म हमारी वेबसाईट से डाउनलोड करें।
सम्पर्क सूत्र- ०७३४०२१२०१२,
वेबसाईट-*www.dayanandparadise.com*
ईमेल- *dayanandparadise@gmail.com*

२. प्रवेश सूचना- संस्कृत प्रेमी सज्जनों को यह सहर्ष सूचना दी जाती है कि गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदों, जिला जीन्द, हरियाणा में संस्कृत महाविद्यालय गतवर्ष से प्रारम्भ हो चुका है। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है, जिसके अन्तर्गत विशारत, शास्त्री (बी.ए.), आचार्य (एम.ए.) की मान्यता है। १०वीं व १२वीं पास विद्यार्थी १ अप्रैल से ३१ जुलाई २०१७ तक कभी भी प्रवेश के लिए सम्पर्क कर सकते हैं। यहाँ पर संस्कृत बोर्ड लखनऊ, उ.प्र. की कक्षाओं (पूर्व मध्यमा और उत्तर मध्यमा) ९वीं से १२वीं का पाठ्यक्रम भी पढ़ाया जाता है। अत: छात्र ये परीक्षाएँ यहाँ से भी दे सकते हैं।

सम्पर्क- ०१६८६-२६२२८८, ०८०५३६६२६५७

३. ऋषि बोधोत्सव मनाया- केसरगंज स्थित आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधोत्सव को समारोहपूर्वक मनाया गया। अध्यक्ष प्रो. रासासिंह पूर्व सांसद, मुख्य अतिथि डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, मुख्यवक्ता आचार्य कर्मवीर, विशिष्ट अतिथि श्री अमित शास्त्री आदि ने अपने उद्‌बोधन प्रदान किये। यज्ञ के ब्रह्मा श्री अमरसिंह शास्त्री, यजमान प्रो. रासासिंह, अजित शास्त्री, चान्दराम आर्य, शान्ति शास्त्री, लालचन्द आर्य थे। खुशवन्तसिंह, स्नेहलता, ज्योति वैदिक, प्रीति आर्या, श्वेता आर्या ने ऋषि महिमा के भजन प्रस्तुत किये।

४. सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- महाशिवरात्रि के अवसर पर आर्यसमाज गोरखपुर, जबलपुर, म.प्र. में सामवेद पारायण यज्ञ २१ से २४ फरवरी २०१७ तक आयोजित हुआ, इस अवसर पर ध्वजारोहण पूर्व प्रधान प्रो. हरिश्चन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। उसी दिन महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव नगर की समस्त आर्यसमाजों द्वारा सम्मिलित रूप से कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्र के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया। उक्त कार्यक्रम में आचार्य पुनीत आर्य-मेरठ, आचार्य संदीप आर्य के प्रवचन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सूर्यकान्त सुमन थे। रमेश कुमार, जे.पी. रथ, श्रीमती नीटू मुखी, श्रीमती सुनीता हांडा आदि द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति दी गई। उक्त अवसर पर टेली फिल्म 'युग दृष्टा-युग सृष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती' का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन अनूप गायकवाड़ व केशव प्रसाद पाठक ने किया।

५. महर्षि जयन्ती सम्पन्न- महर्षि दयानन्द सरस्वती के १९३वें जन्मदिवस पर जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) दिल्ली के इतिहास में प्रथम बार 'स्वामी दयानन्द और उनके भारतीय समाज को योगदान' विषय पर संस्कृत विभाग में व्याख्यान माला सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में वक्ता डॉ. विवेक आर्य- शिशु रोग विशेषज्ञ दिल्ली थे एवं इस गोष्ठी की मुख्य वक्ता डॉ. शशिप्रभा कुमार- पूर्व उपकुलपति, साँची विश्वविद्यालय भोपाल एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग दिल्ली रहीं। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. रामनाथ झा- जे.एन.यू. थे।

६. महर्षि जयन्ती मनाई- आर्यसमाज मन्दिर, पाडल्या कला, नागदा, जि. उज्जैन ने १९३वीं स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती मनाई। सामूहिक यज्ञ धर्माचार्य डॉ. सत्यार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान के रूप में आर्यसमाज के संरक्षक पटेल रामसिंह आर्य, जीवनसिंह पटेल, पुनमचन्द आर्य व यशवन्त आर्य थे।

७. वार्षिकोत्सव मनाया- आर्यसमाज पीपाड़ शहर, जि. जोधपुर, राज. का ८९वाँ वार्षिकोत्सव एवं सामवेद

पारायण यज्ञ ०७ से ११ फरवरी २०१७ को सम्पन्न हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा आर्य कन्या गुरुकुल की आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा थीं, उनके साथ आई गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने सस्वर वेदपाठ किया। समारोह को प्रोत्साहन देने हेतु परोपकारिणी सभा अजमेर से मन्त्री ओममुनि वानप्रस्थी पधारे, जिन्होंने कार्यक्रम की सराहना की।

८. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- गुरुकुल नवप्रभात आश्रम नुँआपाली, बरगड़, ओडिशा का १५वाँ वार्षिकोत्सव दि. ९ व १० फरवरी २०१७ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण तथा ५१ कुण्डीय महायज्ञ स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। नारी व राष्ट्ररक्षा, शिक्षा-संस्कृति, कृषि-गोरक्षा व पर्यावरण सम्मेलन आकर्षण के केन्द्र थे। महर्षि दयानन्द क्लब बरिहापाली, साईं सेवक संघ श्रद्धापाली व समस्त आश्रम प्रेमी बन्धुओं का विशेष सहयोग रहा।

९. बलिदान दिवस मनाया- आर्यसमाज समन्वय समिति, जयपुर नगर, राज. के तत्वावधान में हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर स्थानीय कटेवा नगर के शिव-हनुमान मन्दिर में भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई तथा ओमानन्द परिसर मानसरोवर में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिवस सोल्लास मनाया गया। कॉलोनी के निवासियों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर भजन सरिता का आनन्द लिया।

१०. जन्मोत्सव व बोधोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज मन्दिर हंसापुरी में महाशिवरात्री के पावन पर्व पर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव पर दि. २१ से २४ फरवरी तक चतुर्वेदशतक यज्ञ, प्रवचन व भजन के माध्यम से मनाया गया, जिसमें ५१ जोड़ों ने यज्ञ में भाग लिया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा पं. कृष्णकुमार शास्त्री रहे।

११. बोधोत्सव मनाया- आर्यसमाज मगरा पूँजला जोधपुर में दि. २४ फरवरी २०१७ को ऋषि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव श्री जगदीशसिंह आर्य (संरक्षक) की अध्यक्षता में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री विमल शास्त्री थे। समाज की ओर से नवदम्पती श्री दलपतसिंह देवड़ा, श्री रामकिशन गहलोत, श्री निखिल चौधरी तथा आर्यवीरों को सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ भेंट किया गया।

१२. दयानन्द जयन्ती मनाई- दि. २१ फरवरी २०१७ को विद्या सागर हाई स्कूल, इन्दिरा कॉलोनी, रोहतक में महर्षि दयानन्द जयन्ती धूमधाम से मनाई गई, इस अवसर पर श्री धर्मदेव आर्य ने बच्चों को महर्षि के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर प्रधान श्री इन्द्रजित् ने सामाजिक बुराईयों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने का आह्वान किया।

१३. समृद्धि यज्ञ व संगोष्ठी- वैदिक वीरांगना दल, मालवीय नगर, जयपुर, राज. द्वारा समृद्धि यज्ञ व संगोष्ठी आयोजित की गई। अध्यक्षा अनामिका शर्मा, संरक्षक श्रीमती दुर्गा शर्मा, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुकुट बिहारी, विशेष अतिथि कौशलाधीश मिश्र ने उद्बोधन प्रदान किया। इस अवसर पर कमलेश शर्मा, शालिनी माथुर व विद्या विजयवर्गीय ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रमोद गांधी ने की।

शोक समाचार

१४. श्री सुरेश आर्य (पुस्तक विक्रेता), हिसार, हरियाणा की **माता जी** का देहान्त दि. २३ फरवरी २०१७ को हो गया है। वो ८२ वर्ष की थी। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से आचार्य रामस्वरूप आर्य द्वारा किया गया।

१५. आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान्, संस्कारवेत्ता और आर्य नेता **जागेश्वर आर्य** का इलाहाबाद सिविल लाइंस स्थित उनके निवास पर २१ दिसम्बर २०१६ को निधन हो गया है। अन्त्येष्टि गंगा-यमुना के संगम तट पर हुई। जागेश्वर जी महान् दार्शनिक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। उन्होंने संस्कृत, वैदिक संस्कृति और समाज सुधार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

१६. आर्यसमाज पीपाड़ शहर के वयोवृद्ध **सोमदेव उपाध्याय** का ९० वर्ष की अवस्था में दि. ११ फरवरी २०१७ को आकस्मिक निधन हो गया। सोमदेव जी आर्यसमाज के प्रति बहुत ही गहरी लग्न, आस्था थी, आर्यसमाज के प्रचार के लिए उनके दिल में बड़ी तड़प थी। उनका चिन्तन हमेशा आशावादी एवं सकारात्मक ही रहा।

इन सभी आर्यजनों को परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जली।